

परमात्म प्रेम के 100 वर्षों की कहानी

राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी

दिव्य ज्ञान-गुण रत्नों की खान

दादी जी की मीठी मधुर स्मृतियों का यह संकलन केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि उनके दिव्य जीवन की सजीव अनुभूति है।

आशा है कि यह आपके वर्तमान को दादी जी के पावन जीवन की सुगंध से आलोकित करेगा तथा आपको निरंतर निर्बंधन और निश्चयबुद्धि बनकर आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा देता रहेगा।







स्नेह, सेवा, साधना और शालीनता का अद्वितीय योगी जीवन
राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी
1925-2025




OM SHANTI

100 साल की अद्भुत दिव्य कहानी

मैं स्वयं को अत्यंत सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे परम आदरणीय राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी के साथ 55 वर्षों से अधिक समय तक निकट रहकर सेवा करने का अवसर मिला। उनके जीवन को मैंने केवल देखा नहीं, बल्कि हर दिन, हर क्षण अनुभव किया है।

दादी जी का जन्म 25 मार्च 1925 को हैदराबाद सिंध (तत्कालीन अखंड भारत) में हुआ। बचपन से ही उनका रुझान आध्यात्मिकता की ओर था। मात्र 12 वर्ष की आयु में, 1937 में, वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में आई और उसी क्षण उन्होंने अपने जीवन को परमात्म सेवा में मानव कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। ब्रह्मचर्य का दृढ़ व्रत लेकर उन्होंने एक तपस्वी जीवन की शुरुआत की।

सन् 1950 में, 14 वर्षों की गहन योग साधना और तपस्या के पश्चात्, वे कराची से माउंट आबू आ गईं, जो आगे चलकर संस्था का अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय बना। दादी जी थोड़ी अंग्रेज़ी बोलती थीं और ज्ञान की स्टडी ही उनकी एकमात्र रुचि थी। 1954 में संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने उन्हें संस्था का प्रतिनिधित्व करने के लिए जापान में विश्व शांति सम्मेलन में दादी प्रकाशमणि जी के साथ भेजा - यह संस्था की पहली विदेश सेवा यात्रा थी। इसके बाद उन्होंने लगभग एक वर्ष तक हांगकांग, सिंगापुर और मलेशिया में अनेक आत्माओं तक शांति का संदेश पहुँचाया।

सेवा ही दादी जी की सखी थी। वे कभी नहीं थकती या रुकती थीं - सदा सक्रिय, हर कार्य के लिए "हाँ जी"। 1956 से 1969 तक उन्होंने मुंबई में रहकर भारत के विभिन्न भागों में सेवा करते हुए अनेक सेमिनार और सम्मेलन आयोजित किए। 1972 से 1974 के बीच उन्हें शांति-दूत की तरह यूनाइटेड किंगडम ईश्वरीय संदेश फैलाने के लिए भेजा गया।

युवाओं के प्रति दादी जी का विशेष स्नेह और विश्वास था - वे उनमें भविष्य की दिव्यता और परिवर्तन की शक्ति देखती थीं। अपनी दूरदर्शिता, उत्साह और अटूट संकल्प के साथ उन्होंने युवा सेवाओं को न केवल आरंभ किया, बल्कि आने वाले दशकों में उसे एक सशक्त, मूल्यनिष्ठ और प्रेरणादायक आंदोलन के रूप में विकसित किया। 1985 में उनके नेतृत्व में "भारत एकता युवा पदयात्रा" का आयोजन हुआ, जिसमें देशभर से युवा जुड़े और एक नई जागृति का संचार हुआ। 1989 में "अखिल भारतीय नैतिक जागृति अभियान" के माध्यम से हजारों गाँवों और लाखों लोगों तक नशामुक्ति और नैतिक मूल्यों का संदेश पहुँचा। इस रैली में 67 मैटाडोर वाहनों में 778 प्रतिभागियों ने 1903 गाँवों में 1,36,734 लोगों से नशामुक्ति के प्रतिज्ञा पत्र लिए। इससे कुल 20,85,144 लोग लाभान्वित हुए।

इसके पश्चात् उनके मार्गदर्शन में युवाओं के लिए अनेक नवाचारी प्रकल्प प्रारंभ हुए - जैसे 1989 में राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता, 1990 में वाक् प्रतियोगिता, 1993 में युवा साइकिल रैलियाँ और विशेष रूप से 1997 में "युवा उत्सव"। इन आयोजनों में उनकी रचनात्मकता, दूरदर्शिता और संगठन क्षमता अद्भुत रूप से प्रकट होती थी। सभी को सम्मान के साथ उनकी विशेषताओं को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ाना दादी जी की सबसे विशिष्ट नेतृत्व क्षमता थी।

उन्होंने मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका (1993), कैरेबियन, अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम और स्पेन (1994), ब्राज़ील, अटलांटा (अमेरिका) और यूनाइटेड किंगडम (2001), रूस के मॉस्को और सेंट पीटर्सबर्ग (2003), तथा जापान, फिलीपींस और हांगकांग (2005) सहित विश्व के अनेक देशों में जाकर राजयोग द्वारा आध्यात्मिक शक्ति की पावन तरंगें फैलाईं।













उनके प्रयासों से एक वैश्विक आध्यात्मिक परिवार का निर्माण होता गया और हजारों लोगों को शांति की अनुभूति हुई। 2006 में दादी जी के मार्गदर्शन में ब्रह्माकुमारी संस्था ने विश्व की सबसे लंबी राष्ट्रीय रैली का रिकॉर्ड बनाया। 2013 में इलाहाबाद महाकुंभ में उन्हें संतों और धर्मगुरुओं द्वारा मानव कल्याण के लिए निस्वार्थ सेवा हेतु विशेष सम्मान मिला। 2021 में वे संस्था की मुख्य प्रशासिका नियुक्त हुई। 100 वर्ष की आयु में भी उनका उत्साह, अनुशासन और परमात्मा प्रेम अविचल था।

सन् 2014 में रूस का "लाइटहाउस ऑफ होप" पुरस्कार, 2015 में "पर्ल ऑफ पीस" पुरस्कार तथा भारत गौरव पुरस्कार, 2017 में मानवाधिकार रत्न पुरस्कार, और 2023 में सूर्यदत्त पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, कई विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद डॉक्टरेट उपाधि से भी नवाज़ा।

दादी जी का जीवन साहस, सरलता और समर्पण की अनुपम मिसाल है। उन्होंने न केवल समाज में सकारात्मकता का संचार किया, बल्कि लाखों युवाओं को सशक्त और प्रेरित किया। आज भी उनकी स्मृतियाँ और उनके दिए संस्कार हमें आगे बढ़ने की दिशा देते हैं।

इस पुस्तक में आप संस्था की कई आदरणीय राजयोग शिक्षिकाओं के दादी जी के साथ के अनुभवों को पढ़ेंगे, जो दादी जी को वर्तमान समय में सजीव कर देते हैं और उनके पावन, शुद्ध, शालीन देवी स्वरूप जीवन की एक झलक प्रदान करते हैं।

ब्रह्माकुमारी लीला दीदी
दादी रतन मोहिनी जी की निजी सचिव





दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

हमें ये अभ्यास होना चाहिए कि जो हमारे आत्मिक उत्थान के लिए आवश्यक है, हम उसी का चिंतन करें, उसी को वाणी में व्यक्त करें और उसी के अनुरूप अपने जीवन में गुणों का विकास करते जाएँ। जब हमारे विचार, वाणी और व्यवहार एकरूप हो जाते हैं, तब जीवन सहज ही श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने लगता है।

यदि हम इस प्रकार स्वयं पर ध्यान रखते हैं तो पुरुषार्थ में सफलता स्वाभाविक रूप से अनुभव होने लगती है। जैसे-जैसे सफलता का अनुभव बढ़ता है, वैसे-वैसे अंतर में स्थायी खुशी और संतोष स्वतः प्रकट होते जाते हैं।

ॐ शांति







पवित्रता, ज्ञान और विश्व कल्याण की साकार प्रेरणा – दादी रतन मोहिनी जी

हमारी आदरणीय, न्यारी और प्यारी, धैर्य और ज्ञान की मूर्ति दादी रतन मोहिनी जी की पवित्रता, उनकी स्मृति, वृत्ति और दृष्टि से गहराई से अनुभव होती थी। उनकी भावनाएँ सदैव शुद्ध, श्रेष्ठ और कल्याणकारी थीं। जो भी उनसे मिलता, वह उनकी इन पावन भावनाओं को सहज ही अनुभव कर लेता था। अपने संपूर्ण जीवनकाल में उन्होंने कभी भी किसी के दोष या कमजोरी का वर्णन नहीं किया, न ही कभी उस ओर दृष्टि डाली। वास्तव में, वे पवित्रता की साक्षात देवी थीं।

जब भी मुझे दादी जी से ज्ञान-मुलाकात का अवसर मिला, तब मुझे अत्यंत आत्मिक सुख और प्रेम की अनुभूति हुई। वे इतने प्रेम, रमणीकता और नम्रता के साथ गहन और नवीन ज्ञान की बातें सुनाती थीं कि उनसे उनकी सत्यता और सभ्यता स्वतः ही झलकती थी।

दादी जी की एक और विशेषता थी - सभी के प्रति समदृष्टि और सम्मान का भाव। वे सदैव अपने आध्यात्मिक स्वमान में स्थित रहती थीं, इसलिए उनके बोल, दृष्टि और व्यवहार में हमेशा सम्मान झलकता था। उन्हें इस सत्य का दृढ़ अभ्यास था कि परमात्मा हम आत्माओं के सच्चे पिता हैं और हम उनकी संतान हैं। वे सदैव एकरस और स्थिर मनःस्थिति में रहती थीं - सदैव प्रसन्न, निर्विघ्न और निश्चिंत। उनकी आंतरिक स्थिति गहन शांति और आध्यात्मिक गंभीरता से भरी होती थी, जबकि उनके चेहरे पर सदैव एक दिव्य मुस्कान और नेत्रों में पवित्रता का प्रकाश झलकता था।

युवाओं के लिए दादी जी एक महान प्रेरणा थीं। उन्होंने हजारों नई बहनों के प्रशिक्षण और संस्था के प्रशासन का कार्य अत्यंत सटीकता और परिपूर्णता के साथ किया। उनकी यह विशेषता सभी के लिए प्रेरणास्रोत थी।

यद्यपि हम उनके गुणों का वर्णन अनंत तक कर सकते हैं, परंतु जो मुख्य गुण मैंने उनसे सीखा, वह है - कभी भी व्यर्थ न सोचना, न बोलना और न ही समय को व्यर्थ गंवाना। वे अपने समय, संकल्पों और शक्तियों को कभी व्यर्थ नहीं जाने देती थीं। उनका यही लक्ष्य रहता था कि सब कुछ विश्व कल्याण के लिए सफल करना है।

एकाग्रता के साथ परमात्म प्रेम में मग्न रहना, योग-तपस्या में लीन रहना और एकरस स्थिति में रहते हुए हर कार्य करना - दादी जी का जीवन एक सच्चे कर्मयोगी का उत्कृष्ट उदाहरण था। उनके आध्यात्मिक अभ्यास से सभी को शांति की अनुभूति होती थी।

बचपन से ही उन्होंने स्वयं को परमात्मा के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया था और अंत तक हर संबंध को परमात्मा के साथ अनुभव किया। ऐसी एकव्रता, शक्तिशाली और महान तपस्वी दादी जी का स्नेह हमें सदैव स्मरण रहेगा। उनकी अमिट छाप हमारे हृदय में अंकित है, और हमारा यही प्रयास रहेगा कि हम भी उनके समान सदैव शुभ और कल्याणकारी संकल्प रखें।

राजयोगिनी मोहिनी दीदी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़







दादी जी का जीवन मानवता के लिए अमूल्य धरोहर और उज्ज्वल प्रकाशस्तम्भ हैं

दादी जी के साथ जो पहली मुलाकात स्मरण आती है, वह 1969 की है। मैं प्रशिक्षण के लिए मधुबन आई थी और उसमें कुछ क्लासेज़ दादी रतनमोहिनी जी ने भी करवाई थीं। उसके बाद मुझे सेवा के लिए वापस लंदन जाना था। उस समय मेरी आयु केवल 20 वर्ष थी और मन में संकोच था कि विदेश में सेंटर खोलकर सेवा कैसे हो सकेगी। तब दादी रतन मोहिनी ने स्वयं कहा कि यदि कोई भी बात हो तो उनसे बात करूँ। जब मैं उनके साथ बैठी तो उन्होंने अत्यंत सरल ढंग से समझाया। उनकी बातों से मुझे हिम्मत मिली कि हाँ, लंदन में सेवा प्रारम्भ हो सकती है। दादी के साथ वह संबंध बहुत मीठा था।

सन् 1972 में जब दादी जी यू.के. आई थीं, उसी समय युगांडा में रिफ्यूजी क्राइसिस हुआ और अनेक भारतीय मूल के लोग युगांडा से यू.के. आए। दादी जी की प्रेरणा थी कि उन लोगों की सेवा होनी चाहिए, क्योंकि उनका सब कुछ छूट गया था और उन्हें भगवान की आवश्यकता थी। तब तक डॉ. निर्मला भी इंडिया से वापस आ गई थीं और दोनों रिफ्यूजी परिवारों से मिलने जाती थीं। उसी समय लीसेस्टर में एक परिवार ज्ञान में आया जिसने अपने छोटे से घर में अपना सब कुछ बाबा को अर्पण कर सेवा प्रारम्भ की। दादी जी ने यह नहीं सोचा कि वे एक नए देश में हैं जहाँ किसी को नहीं जानतीं। संकट सामने आया और उन्होंने रिफ्यूजीज़ की सेवा का संकल्प किया, इसी से लीसेस्टर सेंटर की स्थापना हुई। दादी जी पहले केवल 3 महीने के लिए आई थीं, परंतु दादी जी की लगन, योगबल और सकारात्मक दृष्टिकोण से सेवाएँ इतनी अच्छी तरह प्रारम्भ हो गईं कि वे कुल 15 महीने लंदन में रहीं और दिसंबर 1973 में वापस मुंबई लौटीं।

दादी जी 12 वर्ष की आयु में बाबा के पास आई थीं और तभी से आत्म-स्मृति तथा आत्मिक स्थिति का गहन अभ्यास करती थीं। वे ज्ञान का गहराई से मनन-चिंतन करती थीं। अनेक वर्षों तक उन्होंने टीचर्स ट्रेनिंग की ज़िम्मेदारी संभाली। आत्मिक स्थिति के अभ्यास, बाबा के साथ अटूट स्नेह और गहन विचार-सागर मंथन के आधार पर उन्होंने न केवल उत्तम प्रशिक्षण दिया बल्कि माँ के रूप में पालना देकर अनेक कुशल आध्यात्मिक टीचर्स तैयार किए।

उनकी बुद्धि अत्यंत स्पष्ट और तीव्र थी। उन्हें स्टेप-बाय-स्टेप आगे क्या करना है यह स्पष्ट रहता था। इसी आधार पर वे प्रशासन में भी अत्यंत प्रवीण थीं। लव और लॉ का संतुलन रखते हुए व्यवहार सदैव प्रेममय रहे - यह उन्होंने अपने आचरण से दिखाया।

दादी रतन मोहिनी जी में अद्भुत युवा-उत्साह था, इसलिए उन्हें "यूथ दादी" भी कहा जाता था। 100 वर्ष की आयु में भी उनका वही युवापन और रचनात्मकता बनी रही। कहीं भी सेवा के लिए चलने को कहा जाए तो वे सदैव तत्पर रहतीं, कभी मना नहीं करतीं। उन्होंने अपना समय, श्वास और संकल्प तीनों सफल किए, इसलिए 100 वर्ष की आयु तक भी सक्रिय रहीं।

ऐसी महान प्रेरणामूर्ति दादी रतन मोहिनी जी का दिव्य जीवन हम सभी के लिए अमर प्रेरणा है। उनका त्याग, तपस्या, सेवा और आध्यात्मिक श्रेष्ठता अनेकों को मार्गदर्शन देती रहेगी।

राजयोगिनी जयन्ती दीदी
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

यदि हम बुरा सुनकर दुखी होते हैं, तो अच्छा सुनकर अवश्य ही खुश भी होंगे - इस प्रकार हमारी स्थिति सुख और दुख में बदलती रहती है। आध्यात्मिक ज्ञान हमें यह सिखाता है कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों - चाहे कोई निंदा करे या स्तुति - हमारी अवस्था एकरस, अचल और अडोल रहनी चाहिए।

यह तब संभव होता है जब हम प्रतिदिन परमात्मा द्वारा दिए गए ज्ञान का मनन-चिंतन करें और और सदा उसी चिंतन में मगन रहें। जब यह अभ्यास निरंतर और दीर्घकाल तक चलता है, तब हमारी खुशी किसी परिस्थिति पर निर्भर नहीं रहती, बल्कि भीतर से निरंतर बढ़ती जाती है।

ॐ शांति







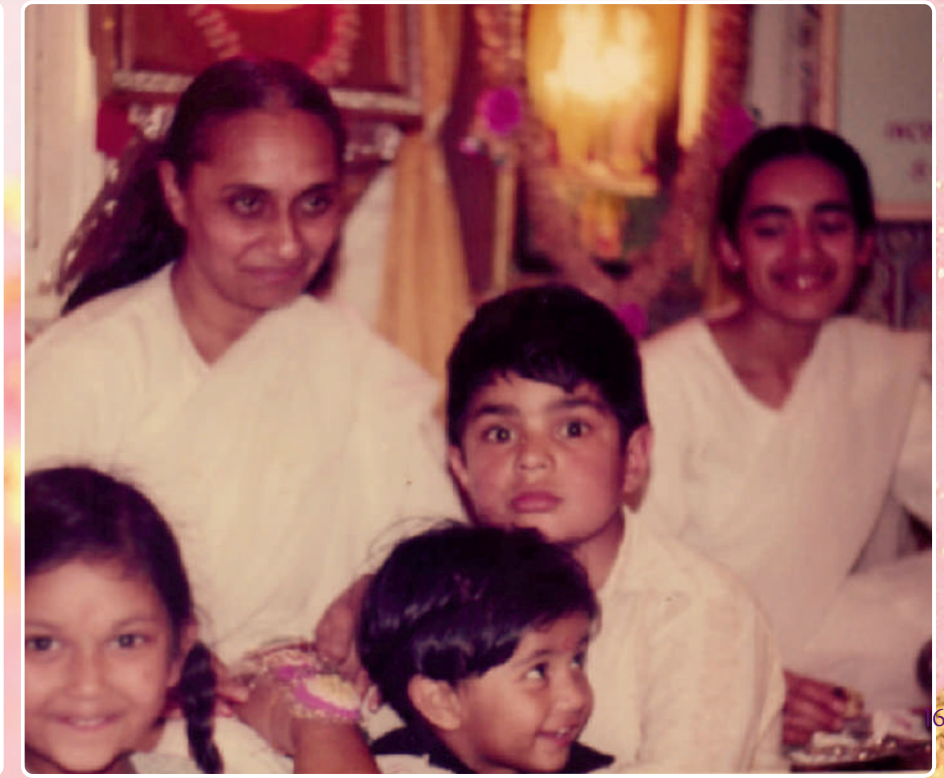

ज्ञान की पराकाष्ठा, निर्भयता, सम्मान और रुहानी व्यक्तित्व की दिव्य प्रतिमा

शुरुआत में दादी रतन मोहिनी जी अपनी माताजी देवी बहन के साथ मुंबई में एक छोटे से फ्लैट में रहती थीं, परंतु गृहस्थ में रहते हुए भी उनकी ज्ञान में गहरी रुचि और अत्यंत अनुशासित, सटीक दिनचर्या सभी को आकर्षित करती थी। उस समय संस्था में माताएँ अधिक थीं और कुमारियाँ बहुत कम, फिर भी दादी जी बड़े-बुजुर्गों और नई युवा कुमारियों - दोनों के साथ अत्यंत सहज और संतुलित भूमिका निभाती थीं।

विदेश में सेवाओं की नींव रखने में भी दादी जी की अहम भूमिका रही। जापान और लंदन में उन्होंने कुछ वर्ष रहकर नित नए तरीकों से विभिन्न राष्ट्रीयताओं के लोगों को राजयोग सिखाया। यह उनकी अटल दृढ़ता और निर्भयता का ही कमाल था। जब दादी जी लंदन आई थीं, तो उनकी माताजी भी साथ आई थीं। दादी जी ने उनकी पालना-सेवा भी बड़ी निपुणता से की और साथ ही ईश्वरीय सेवा भी अत्यंत परफेक्शन से निभाई।

उनकी विशेषता थी कि जो भी उनके संग में आता, उसे ज्ञान अध्ययन की प्रेरणा मिलती। इसका सुंदर उदाहरण नलिनी दीदी हैं - जो उस समय छोटी कुमारी थीं। दादी जी के संग में आकर उनकी भी ज्ञान में उन्नति हुई। अपने आदर्श जीवन से दादी जी ने नलिनी दीदी और उनके माता-पिता को इतना प्रेरित किया कि उन्होंने ईश्वरीय सेवाओं में जीवन समर्पित किया, और उनके माता-पिता ने भी सेवा के लिए घर समर्पित करने का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

ब्रह्मा बाबा प्रारंभिक दिनों में नए-नए ड्रामा और नाटक तैयार करवाते थे। जैसे एक नाटक था, जिसमें एक "भूला भाई" बनता था और दूसरा ज्ञानी, जो उसे ज्ञान से समझाता था। दादी रतन मोहिनी जी उसमें भी बहुत सुंदर रूप से अपना पार्ट निभाती थीं। प्रारंभिक समय में जो गीत लिखे जाते थे, उन पर पाळू दादी जी के साथ मिलकर दादी रतन मोहिनी जी नृत्य भी तैयार करती थीं। ज्ञान अध्ययन में तो उनकी गहरी रुचि थी ही, साथ ही वे कलाओं में भी निपुण थीं। उनकी सदा यही शुभ भावना रहती थी कि जैसे उनका जीवन श्रेष्ठ बना है, वैसे ही अन्य आत्माओं का भी बने। इसीलिए दादी जी को नई आने वाली कुमारियों की आध्यात्मिक, नैतिक और सेवा केंद्र की कार्यशैली की ट्रेनिंग का इंचार्ज बनाया गया। उन्होंने पूरे विश्व में रहने वाली हज़ारों ब्रह्माकुमारी बहनों को माँ समान पालना देकर एक आदर्श, अनुशासित शिक्षिका के रूप में प्रशिक्षित किया।

97 वर्ष की आयु में भी मुझे याद है, कभी-कभी मैं दादी जी के साथ सोलर पार्क में बॉल्स खेलने जाती थी। दादी जी खेलने में इतनी कुशल थीं - भले बैटरी कार में बैठकर खेलती थीं, परंतु अत्यंत सक्रिय और फ्लेक्सिबल रहती थीं। वे सदा अपनी दिनचर्या में बहुत अनुशासित रहीं। यदि पैदल चलने का समय है, तो रोज़ पैदल चलना ही है। वे सदैव आत्मनिर्भर और स्वावलंबी रहीं - कभी किसी पर भी निर्भर नहीं बनीं। दादी जी की मुस्कुराहट से दिव्यता और पवित्रता झलकती थी और उनकी रूहानी दृष्टि से शुभ भावना के प्रकंपन महसूस होते थे। उनके मौन में भी ऐसी गहराई थी।

शुरू से ही दादी जी की आवाज़ बुलंद और वाणी निर्भीक थी। ज्ञान सुनाने में रुचि तो थी ही, साथ ही निर्भयता और निश्चय के गुण से उनके शब्द सभी के हृदय को स्पर्श करते हुए उमंग-उत्साह की तरंगें उत्पन्न करते थे।

राजयोगिनी सुदेश दीदी
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़






OM SHANTI

दादी जी अंतर्मुखता, स्नेह और परमात्मा पर अटूट निश्चय की दिव्य मिसाल थीं

दादी जी केवल एक प्रशासिका नहीं थीं, वे वास्तव में ज्ञान की चैतन्य मूर्ति थीं। उनके व्यक्तित्व में दृढ़ता, स्नेह, अनुशासन और मातृत्व का अद्भुत संगम था। जब भी मैं उनके समीप बैठता था, अनुभव होता था कि वे केवल शब्दों से नहीं, बल्कि अपनी दृष्टि और प्रकंपन से भी आत्मा को शक्ति प्रदान करती थीं।

मुझे अनेक अवसर मिले जब संगठन के महत्वपूर्ण निर्णयों पर उनके साथ चर्चा करने का सौभाग्य मिला। दादी जी का दृष्टिकोण सदैव व्यापक, संतुलित और दूरदर्शी होता था। वे कहती थीं - "सेवा में सफलता तभी है जब उसमें शुद्ध भावना और एकता का बल हो।" उनका यह वाक्य आज भी मेरे जीवन और सेवा-पथ का मार्गदर्शन करता है।

दादी जी का जीवन सादगी और उच्चता का अद्भुत उदाहरण था। वे अत्यंत सरल जीवन जीती थीं, पर उनके विचार अत्यंत ऊँचे और प्रभावशाली थे। चाहे देश-विदेश की बड़ी सभाएँ हों या छोटे सेवा केंद्र का कार्यक्रम – उनका उत्साह, समर्पण और प्रेम सदैव समान रहता था। वे प्रत्येक ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी को परिवार का सदस्य मानती थीं।

मुख्यालय में जब भी कोई चुनौतीपूर्ण परिस्थिति आती, दादी जी का धैर्य और स्थिरता हम सबके लिए प्रेरणा बनती थी। वे सिखाती थीं कि परिस्थिति चाहे कैसी भी हो, यदि मन परमात्मा से जुड़ा है तो समाधान अवश्य मिलेगा। यही अटूट विश्वास उनकी सबसे बड़ी शक्ति था।

शान्तिवन की यह भूमि दादी जी की अनगिनत तपस्याओं की साक्षी है। प्रातः काल की अमृतवेला से लेकर रात्रि के अंतिम क्षण तक उनका प्रत्येक पल सेवा को समर्पित था। वे स्वयं अनुशासन का पालन करती थीं और हमें भी प्रेरित करती थीं कि समय की पाबंदी, शुद्धता और एकाग्रता को जीवन का अंग बनाएं।

दादी जी की एक विशेषता थी - वे हर आत्मा में विशेषता देखती थीं। यदि किसी में कमजोरी होती, तो उसे डाँटने के बजाय प्रेरित करती थीं। उनका विश्वास था कि प्रेम से परिवर्तन संभव है। उनके स्नेहिल शब्द आज भी हृदय में गूंजते हैं।

दादी जी ने सिखाया कि संगठन की शक्ति एकता में है। यदि हम सब एक परिवार की भावना से, एक लक्ष्य और दिशा में आगे बढ़ें, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं। आज विश्व में जो अशांति, असंतुलन और मूल्यहीनता दिखाई देती है, उसका समाधान आध्यात्मिक जागरण में है—और यही कार्य ब्रह्माकुमारीज कर रही है।

दादी जी अक्सर कहती थीं – "स्वयं को बदलो, संसार बदल जाएगा।" यदि हम अपने भीतर ज्ञान, योग और धारणा को मजबूत करें, तो यही इस स्तम्भ की सच्ची सार्थकता होगी। दादी जी का जीवन हम सबके लिए एक दीपस्तम्भ है - जो अंधकार में भी मार्ग दिखाता है।

राजयोगी करुणा भाई
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

परमात्मा ने हम बच्चों को यह शिक्षा दी है कि हमें हर एक से गुण ग्रहण करने हैं। हर एक के गुणों को देखने से हमारे अंदर भी गुणों का विकास होता है। यदि हम किसी की गलती पर ध्यान देते हैं, तो संभव है वही गलती कभी हमसे भी हो सकती है। यह नहीं कहना चाहिए कि हम कभी गलती नहीं कर सकते - जब तक हम संपूर्ण नहीं बने हैं, तब तक सीखने की प्रक्रिया चलती रहती है।
इसलिए यदि हम सदा गुणों को ही देखेंगे, तो हमारे भीतर गुणों का खजाना बढ़ता जाएगा और हम सहज ही संपूर्णता की ओर आगे बढ़ते जाएँगे।

ॐ शांति


मानवाधिकार रत्न पुरस्कार से सम्मान
2017 डायमण्ड हॉल, शान्तिवन
मारीज़ एवं केन्द्रीय मानवाधिकार संगठन, नई दिल्ली




Hon'ble

आध्यात्मिक नेतृत्व और करुणामय व्यक्तित्व : दादी रतनमोहिनी जी

आदरणीय दादी रतनमोहिनी जी ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में अत्यंत जनप्रिय, लोकप्रिय और प्रभुप्रिय व्यक्तित्व थीं। उनका जीवन आध्यात्मिक समर्पण का अद्भुत संगम था।

वे सदैव नवीन विचारों से युक्त एक क्रिएटिव माइंड की धनी थीं और विशेष रूप से युवा वर्ग को प्रेरित कर उन्हें आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर जीवन जीने तथा संस्था की सेवाओं में समर्पित होने के लिए प्रोत्साहित करती थीं।

दादी जी ने संस्था में समर्पित होने वाले अनेक बहनों को प्रशिक्षण देकर उन्हें इस महान आध्यात्मिक सेवा के योग्य बनाया। उनके मार्गदर्शन में अनेक आत्माएँ आध्यात्मिकता के मार्ग पर आगे बढ़ीं और इस संस्था के सेवाकार्य को विस्तार मिला।

मुझे दादी जी को व्यक्तिगत रूप से जानने और उनके साथ विभिन्न स्थानों - बैंगलोर, मैसूर, तिरुपति, हैदराबाद, वारंगल, काकिनाडा, गुलबर्गा, विजयवाड़ा आदि की यात्राओं में साथ रहने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके सान्निध्य में बिताया प्रत्येक क्षण मेरे लिए एक अमूल्य आध्यात्मिक अनुभव रहा।

गुलबर्गा विश्वविद्यालय द्वारा दादी जी को डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान कराने के निमित्त मैं बन सका, इसे मैं अपने जीवन का एक विशेष सौभाग्य मानता हूँ।

दादी जी अत्यंत क्षमाशील, करुणामयी और महान शिक्षिका थीं। उनके समक्ष यदि कोई अपनी भूल स्वीकार कर क्षमा माँगता, तो वे उसे स्नेहपूर्वक क्षमा कर नई प्रेरणा और उत्साह के साथ जीवन में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाती थीं।

समाज के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं राजनेताओं से भी उनके अत्यंत मधुर और सम्मानपूर्ण संबंध थे। वे सभी को लोककल्याण के लिए त्याग, तपस्या और सेवा-भाव से युक्त जीवन जीने की प्रेरणा देती थीं।

दादी जी का पावन जीवन, उनका तप, त्याग और आध्यात्मिक सेवा हम सभी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। उनकी दिव्य स्मृतियाँ हमें निरंतर श्रेष्ठ जीवन जीने और मानवता की सेवा के मार्ग पर अग्रसर होने की शक्ति प्रदान करती रहेंगी।

राजयोगी डॉ. मृत्युंजय भाई
अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़




अभिनन्दन पत्र





दादी जी का जीवन राजयोग साधना, गहन तपस्या और निरंतर सेवा का अद्भुत संगम था

दादी रतनमोहिनी जी एक ऐसी दिव्य आत्मा थीं जिनका सम्पूर्ण जीवन ईश्वर-समर्पण, आध्यात्मिक साधना और मानवता की सेवा के लिए समर्पित रहा। उनकी दिव्य स्मृतियाँ, आदर्श और स्थापित आध्यात्मिक संस्कार सदैव मानवता को प्रेरित करते रहेंगे।

उनका जीवन प्रारम्भ से ही सात्विक, सरल और आध्यात्मिक प्रवृत्ति से परिपूर्ण था। दादी जी मेरा पहला परिचय लगभग 50 वर्ष पूर्व कुमारों की भट्ठी में हुआ। उनकी दृढ़ता और आत्मविश्वास ने मुझे विशेष प्रेरणा दी। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व और अनुशासन हमें सदैव सद्मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता था।

वे सदैव परमात्म स्मृति में स्थित रहते हुए प्रत्येक सेवा को ईश्वर की आज्ञा और जिम्मेदारी समझकर करती थीं। समय के साथ उन्हें संगठन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं और अंततः वे सर्वोच्च आध्यात्मिक नेतृत्व में प्रतिष्ठित हुईं। उन्होंने अपने नेतृत्व को अधिकार नहीं, बल्कि सेवा के अवसर के रूप में स्वीकार किया। उनकी कार्यशैली अत्यंत विनम्र, शांत और प्रेरणादायक थी। वे सदा प्रेरित करती थीं कि संगठन की सच्ची शक्ति पद या प्रतिष्ठा में नहीं, बल्कि पवित्रता, निःस्वार्थ सेवा और परमात्मा की स्मृति में है।

दादी जी की मुरली सुनाने की लयबद्ध विधि हम सभी को सदैव अलर्ट रखती थी और वे बाबा की शिक्षाओं को जीवन में धारण करने पर विशेष बल देती थीं। उनका आत्म-अभिमानी स्थिति और साइलेंस पर विशेष ध्यान रहता था। उन्होंने हर सेवा को अत्यंत कुशलता से निभाया - चाहे टीचर्स ट्रेनिंग हो, राजस्थान ज़ोन की सेवा हो या युवा वर्ग की सेवा। उन्होंने यज्ञ में अपनी भूमिका निष्ठा और लगन से निभाई।

दादी जी त्यागमूर्त और ईश्वरीय शिक्षाओं का साकार स्वरूप थीं। साधना उनके जीवन का प्रमुख आधार थी। वे साधनों का अत्यंत सावधानी से प्रयोग करती थीं और सभी को ज्ञान रत्नों से भरपूर करती थीं। वे सदा सक्रिय रहीं और प्रत्येक कार्य बाबा की श्रीमत के अनुसार करती थीं।

उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सरलता और मातृत्व भावना थी। वे हर व्यक्ति से प्रेम, सम्मान और आत्मीयता से मिलती थीं। चाहे कोई नया व्यक्ति हो या वरिष्ठ सेवाधारी, वे सबको समान दृष्टि से देखती थीं। उनके पास आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने को सुरक्षित, सम्मानित और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध अनुभव करता था। उनकी वाणी में मधुरता और अनुभव की गहराई होती थी; उनके शब्द केवल उपदेश नहीं, बल्कि उनके जीवन की तपस्या और अनुभव का सार होते थे।

दादी रतनमोहिनी जी का सम्पूर्ण जीवन स्वयं एक जीवंत संदेश था। वे सदा इस बात पर बल देती थीं कि सच्ची आध्यात्मिकता केवल ज्ञान सुनने या पढ़ने में नहीं, बल्कि उसे जीवन में धारण करने में है। वे कहा करती थीं कि जब विचार पवित्र होते हैं, तो व्यवहार भी दिव्य बन जाता है और संबंधों में प्रेम व शांति की अनुभूति होती है।

उनका जीवन हमें सिखाता है कि यदि मनुष्य अपने जीवन को परमात्मा की स्मृति, पवित्रता और सेवा के मार्ग पर समर्पित कर दे, तो वह संसार में रहते हुए भी दिव्य जीवन जी सकता है।

राजयोगी डॉ. प्रताप
अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़


प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय
विश्व नव निर्माण प्रदर्श
प्रवेश निःशुल्क
स्थानः पुराणिक भवन,
3 6 68 से 20 6 68 तक प्रतिदिन प्रात: 8 से 12 तक, सांय
से 8

दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

शांति में रहने से कितनी गहरी खुशी का अनुभव होता है। यदि हम शांति में रहने का लक्ष्य रखते हैं, तो आध्यात्मिक ज्ञान के महावाक्य सहज ही स्मृति में आते हैं, और भीतर से भाव उठता है - "वाह बाबा, शुक्रिया बाबा" - तब खुशी और भी बढ़ जाती है।

जब हम संगठन में योग-तपस्या में एकाग्रचित होकर बैठते हैं, तो स्वयं को भी बहुत अच्छा लगता है और वातावरण भी पवित्र व सुखद बन जाता है। जो भी देखता है, वह अनुभव करता है कि यह कितना अच्छा योगी है - एकाग्र, स्थिर और चेहरे पर मधुर मुस्कान, क्योंकि भीतर सच्ची खुशी है। ऐसे समय में साइलेंस की शक्ति अपना कार्य करती ही है, साथ ही उस आंतरिक खुशी की झलक भी दूसरों तक पहुँचती है। इसलिए साइलेंस में रहने का अभ्यास करो।

ॐ शांति




May, 2023
Kumaris, Abu Road
arendra Modi



एकाग्रता की शक्ति और लक्ष्यनिष्ठा ने दादी जी को सम्पूर्ण बनाया

मैं 16 वर्ष की थी जब मैंने ईश्वरीय सेवा में विश्व कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। यह मेरा महान सौभाग्य रहा कि भले ही मैं सेवाकेंद्र पर रहती थी, फिर भी योग तपस्या भट्टियों के कार्यक्रमों का संचालन करने के लिए मुझे अक्सर मधुबन आने का अवसर मिलता था। उन भट्टियों की इंचार्ज परम श्रद्धेय रतनमोहिनी दादी जी थीं। एक होता है कि व्यक्ति के पास ज्ञान है, समझ है; और दूसरा यह होता है कि वह ज्ञान के अनुरूप पूरे लंबे समय तक प्रैक्टिकल जीवन जीए और उसी अनुसार अपना कार्य-व्यवहार करे। यह विशेषता मैंने दादी जी में देखी। वे साक्षात ज्ञानस्वरूप थीं - उनके आचरण, कार्य-कारोबार और व्यवहार में ज्ञान सदा झलकता था।

मेरा भी कुछ ऐसा ही कार्य-शैली रहा। इसी कारण प्रारम्भ से ही दादी जी के साथ कुमारियों की ट्रेनिंग में, भट्टियों में और बाद में विभिन्न कॉन्फ्रेंसों में सेवा करने का मेरा भी विशेष भूमिका रहा। दादी जी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने कभी भी अपनी ऊर्जा और समय को व्यर्थ नहीं जाने दिया। वे अपने लक्ष्य के प्रति इतनी एकाग्र और संकल्पबद्ध थीं कि उनका प्रत्येक क्षण सार्थकता से परिपूर्ण होता था। उनकी यही अटूट लगन और लक्ष्यनिष्ठा हम सभी के लिए एक महान प्रेरणा है।

100 वर्ष की आयु में भी दादी जी की रुचि मुरली के अध्ययन में ही रहती थी - वही उनका सच्चा शौक था। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हम जहाँ भी हों और जो भी हमारी ड्यूटी हो, उसे पूरी एकाग्रता, निष्ठा और सटीकता के साथ निभाना चाहिए।

ब्रह्माकुमारीज़ विश्व की सबसे बड़ी संस्था है, जो माताओं एवं बहनों द्वारा संचालित है - इसका श्रेय भी दादी जी को जाता है। हजारों बहनें संस्था में सेवा के लिए समर्पित हुईं; प्रत्येक के संस्कार अलग, भाषा और प्रांत अलग, व्यवहार और पारिवारिक पृष्ठभूमि अलग - अर्थात् विविधता की असीम धारा। साथ ही दादी जी की आयु भी बहुत अधिक थी और बहनें तो बहुत छोटी आयु में ही ट्रेनिंग में आती हैं। फिर भी दादी जी ने सभी को दिल से स्वीकार किया, शुभ भावना से देखा, उनकी विशेषताओं को पहचाना और उन्हें सेवा में सुन्दर रीति से स्थापित किया।

दादी जी में नई-नई बातें सीखने की तत्परता थी, और उनकी बुद्धि अत्यंत विशाल थी। वे समय के साथ नई पीढ़ी के अनुसार अच्छी-अच्छी रचनात्मक बातें सीखती गईं। आज जहाँ पीढ़ीगत अंतर की बात की जाती है, वहाँ दादी जी के साथ कभी भी ऐसी अनुभूति नहीं होती थी। उनके सान्निध्य में हर आत्मा सहज रूप से अपनेपन का अनुभव करती थी। वे खुले विचारों वाली, उदारमना थीं।

दादी जी सदैव बौद्धिक स्पष्टता और स्नेहपूर्ण व्यवहार के साथ समझानी देकर सभी को आगे बढ़ाती थीं। उनका यह अद्भुत संतुलन - ज्ञान, स्नेह और व्यवहार कुशलता का - हम सभी के लिए एक अमूल्य प्रेरणा है।

दादी जी की हर क्रिया रॉयल्टी से पूर्ण कला प्रतीत होती थी और उनके आध्यात्मिक अनुशासन, शालीनता, रमणीयता, निर्भयता, एकव्रता और विशाल बुद्धि के कारण वे आज भी विश्व पटल पर एक महान विभूति, महान तपस्विनी के रूप में प्रकाशमान हैं।

ब्रह्माकुमारी गीता दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, शांतिवन, आबू







दादी जी परमात्मा से प्रेम और विश्व कल्याण के प्रति निष्ठा तथा समर्पण की अद्भुत मिसाल थीं

मैं दादी रतन मोहिनी जी से पहली बार सन् 1975 में मिला था, जब मैं पहली बार मधुबन गया था। उस समय दादी जी योग करा रही थीं, और मैं उनसे शक्तिशाली दृष्टि ले रहा था। उसी क्षण मैंने उनके भीतर से अत्यंत शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा और गहन योगी स्वरूप का अनुभव किया। प्रारंभ से ही मुझे ऐसा लगा मानो मैं उन्हें पहले से जानता हूँ। वे थोड़ी अंग्रेज़ी भी बोल लेती थीं, जिससे संवाद करना सहज हो जाता था। जब भी उनसे बात होती, वे सदैव मन से हल्की, प्रसन्न और आनंदमयी रहती थीं। मैंने अनुभव किया कि यही एक सच्चे योगी की पहचान है।

हाल के वर्षों में मुझे दो बार पाकिस्तान जाने का सौभाग्य मिला। कराची में मैंने वे भवन देखे, जहाँ से संस्था की शुरुआत हुई थी - जहाँ दादी रतन मोहिनी जी और उनकी माताजी भी रहीं। दादी जी बचपन से ही आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर जीवन को पवित्रता से सशक्त करने के संकल्प को निभा रही थीं - वे वास्तव में महान योगी और तपस्वी थीं। यह देखना अत्यंत विशेष अनुभव था कि उनकी आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत किन परिस्थितियों से हुई।

मेरी आध्यात्मिक यात्रा में अनेक प्रेरणाएँ रही हैं - लंदन में मैंने दादी जानकी जी से राजयोग सीखा, परंतु दादी रतन मोहिनी जी की "आत्मा-स्वरूप" पर दी गई क्लासेस का मेरे जीवन पर अत्यंत गहरा प्रभाव रहा। उन्होंने जिस प्रकार आत्म-स्मृति का अभ्यास सिखाया, वह आध्यात्मिक जीवन की नींव है। उनकी एक क्लास, जिसमें उन्होंने कराची के दिनों और आत्म-चेतना के अभ्यास का वर्णन किया, मेरे लिए अत्यंत गहन और अमूल्य रही है। उनकी यह क्लास अनेक विदेशी साधकों के लिए एक मार्गदर्शक ग्रंथ के समान रही है।

दादी जी ऑस्ट्रेलिया भी गई थीं और वहाँ उनके स्नेह, विनम्रता और मधुरता ने सभी के हृदय को स्पर्श किया। उनका सहज, प्रसन्न स्वभाव और मधुर मुस्कान सभी को अपनी ओर आकर्षित करती थी। वे अत्यंत सरल, कोमल और साथ ही अत्यंत शक्तिशाली एवं स्थिर योगी आत्मा थीं।

मुझे एक अवसर याद है जब मैं तमिलनाडु के मदुरै शहर में एक विशाल कार्यक्रम में उनके साथ था, जहाँ लगभग 60,000 लोग उपस्थित थे। दादी जी मुख्य वक्ता थीं। उन्होंने अत्यंत विनम्रता और प्रेम से अपने बचपन की कथा और शिव परमात्मा के अवतरण की बात सुनाई। पूरा वातावरण एकदम शांत हो गया - मानो सभी उनके शब्दों से गहराई से जुड़ गए हों। उनकी वाणी में इतना प्रेम और सम्मान था कि सभी हृदय स्पर्शित हो गए।

संस्था के इतिहास के कुछ अत्यंत प्रिय दृश्य वे हैं जब दादी जी जापान गई - भारत से बाहर ईश्वरीय सेवा का प्रथम चरण। एक युवा कुमारी के रूप में उनका साहस, भाषा न जानते हुए भी केवल परमात्म प्रेम के आधार पर वहाँ सेवा करना, उनकी निष्ठा और समर्पण को दर्शाता है। यह उनके महान आत्मा होने का प्रमाण है।

मैं अनुभव करता हूँ कि दादी रतन मोहिनी जी ने मेरे आध्यात्मिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि एक आदर्श आध्यात्मिक योगी जीवन वास्तव में कैसा हो सकता है - सरल, स्नेहमय, शक्तिशाली और पूर्ण समर्पित। वे मेरे लिए सदैव प्रेरणा स्रोत रहेंगी।

ब्रह्माकुमार चार्ली भाई
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, ऑस्ट्रेलिया

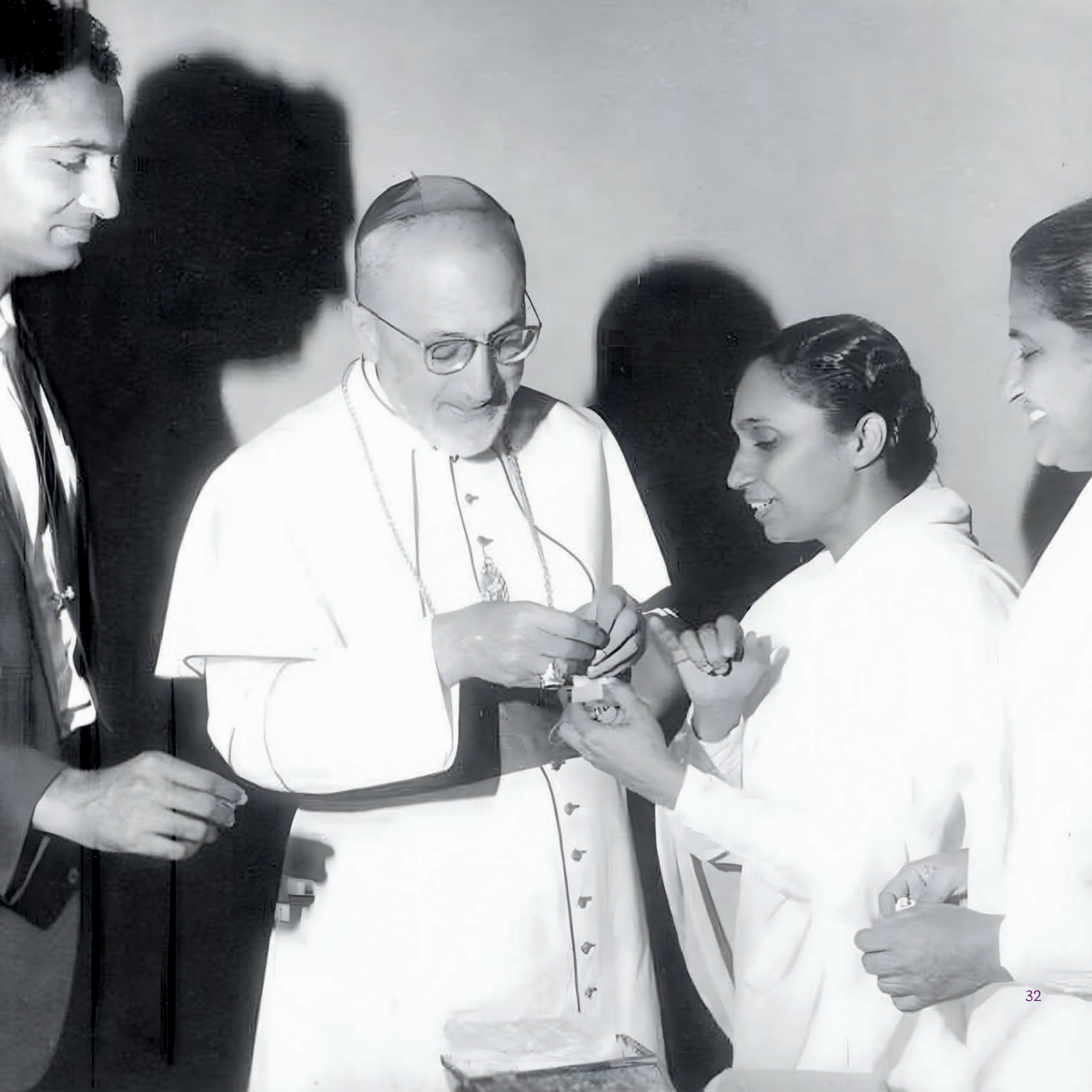

दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

यदि हमने परमात्मा की शिक्षाओं को अपने जीवन में सचमुच धारण किया है, तो वह धारणा हमारे अंदर निर्मानता का गुण अवश्य जागृत करती है। निर्मानता केवल एक गुण नहीं, बल्कि एक शक्ति है - जो हर परिस्थिति में हमारी सहायता करती है। इसी से सहनशक्ति विकसित होती है। यदि कोई हमें कुछ बुरा भी कहे, तो भी हमारी मनःस्थिति डगमग नहीं होती।

निर्मानचित रहना और निर्मान भाव हमें किसी भी परिस्थिति में उदास नहीं होने देगा। निर्मानता हमें कभी पीछे नहीं हटने देती। कभी-कभी परिस्थितियाँ ऐसी प्रतीत होंगी मानो रुकावट आ रही हो, परंतु वह केवल देखने में होगा - वास्तव में हम आगे ही बढ़ते रहेंगे।

ॐ शांति









ईश्वरीय सेवाओं में अपना समय, संकल्प, शक्तियाँ सफल करने की अनुपम मिसाल थीं दादी जी

दादी जी ने इस संस्था में 100 वर्षों तक अनवरत सेवाएँ दीं। मुझे 1972 से ही उनके सान्निध्य में सीखने का अवसर मिला। उनका विशेष रुझान ज्ञान और परमात्म महावाक्यों की ओर था। वे ज्ञान का गहन अभ्यास करतीं और प्रारम्भ से ही बाबा के महावाक्यों को लिपिबद्ध करती रहीं। उनके हाथों से सिंधी भाषा में लिखे ज्ञान-नोट्स को मैं टाइप करता था। दादी जी ने कराची में संस्था के इतिहास और ज्ञान की दिव्य बातों को अपनी डायरियों में अत्यंत सुंदर, कथा-रूप में संजोया। उन्हें पढ़ते समय ऐसा लगता है मानो कोई आँखों देखा विवरण सामने आ रहा हो - उन्होंने उस समय के दृश्यों को अपनी लेखनी से सजीव रूप में प्रस्तुत किया।

धनाढ्य परिवार से होने के बावजूद उन्होंने अत्यंत साधारण, त्यागमय और तपस्वी जीवन अपनाया, जो हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जब भी विश्वभर में फैले राजयोग अभ्यासियों के लिए आत्म-उन्नति हेतु योग की गहराई या ज्ञान-बिंदु भेजने होते, तो दादी प्रकाशमणि जी मुझे सामग्री तैयार करने को कहतीं और उसे दादी रतनमोहिनी जी को दिखाकर अनुमोदित कराने का निर्देश देतीं। वे स्वयं भी उसे बड़े ध्यान से पढ़तीं और आवश्यक संशोधनों हेतु मार्गदर्शन देती थीं।

दादी जी प्रारम्भ से ही पवित्रता की साक्षात् मूर्ति रहीं। मन, वचन और कर्म की पूर्ण पवित्रता तथा सच्चाई और स्वच्छता के बल पर उन्होंने परमात्मा पिता का हृदय जीता। आज भी उनकी शुभ भावना और शुभकामनाओं के पवित्र वायब्रेशन अनुभव होते हैं। अपने दिव्य जीवन से उन्होंने विश्व पर अमिट अलौकिक छाप छोड़ी।

ब्रह्माकुमार राजू भाई
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, माउंट आबू

आदरणीय राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी के साथ मेरा विशेष अनुभव 1985 के बाद का है, यद्यपि उनसे मेरा परिचय 50 वर्षों से भी अधिक पुराना था। वर्ष 1985 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया गया। इस अवसर को भव्य रूप में मनाने का दायित्व हमें परम आदरणीय दादी प्रकाशमणि जी द्वारा सौंपा गया।

देश के 12 प्रमुख स्थानों—जैसे दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई और मद्रास—से यात्राएँ प्रारंभ हुईं और मधुबन में उनका भव्य समापन हुआ। इस ऐतिहासिक अवसर पर तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह की उपस्थिति भी रही। इसी अवधि में मुझे दादी प्रकाशमणि जी और दादी रतन मोहिनी जी के निकट रहकर सेवा करने का सौभाग्य मिला। हम नियमित रूप से साप्ताहिक बुलेटिन तैयार कर उनके मार्गदर्शन में, पूरे भारत में भेजते थे।

इसके बाद संस्था की गोल्डन जुबली और फिर डायमंड जुबली के दौरान भी उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला। इन अवधियों में संस्था के विभिन्न विंग्स का स्वरूप विकसित हुआ। दादी जी के विचार अत्यंत स्पष्ट और व्यवहारिक होते थे। वे निर्णय लेने में समय लेती थीं, परंतु उनके निर्णय सटीक और सफल सिद्ध होते थे।

वास्तव में, दादी रतन मोहिनी जी ने अपनी स्पष्ट सोच और दूरदर्शिता से हम सभी को एक उत्कृष्ट दिशा प्रदान की। उनके प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि है।

ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल भाई
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, माउंट आबू




YOUTH
FESTIVAL





ममतामयी पालन और पवित्रता की स्नेहमयी आंचल – दादी रतन मोहिनी जी

सन् 1988 की बात है। उस समय मुझे सेवाकेंद्र पर रहते हुए केवल एक वर्ष ही हुआ था। तभी मधुबन से एक वर्ष की समर्पित टीचर्स भट्टी का प्रोग्राम आया और मुझे उसमें जाने का अवसर मिला।

भट्टी मेडिटेशन हॉल में चल रही थी। दादी जी का पहला ही क्लास था और उनके महावाक्य थे - "अभी बाबा, दादियां और बड़ी दीदियां कहती हैं कि आप ब्रह्माकुमारी बनो। यदि अभी आपने अपने जीवन को नियम, ईश्वरीय मर्यादाओं और कायदे के अनुसार श्रेष्ठ बना लिया, तो इस जन्म का भाग्य तो ऊंचा है ही, क्योंकि आपने भगवान को जीवन दिया है। बाबा कहते हैं - एक कन्या 21 कुल का उद्धार करती है। यह वही जीवन है, जिससे अविनाशी भविष्य जन्म-जन्मांतर उज्ज्वल बन जाता है। आप कुल के दीपक बनेंगे - यही इस समय और जीवन का महत्व है।"

ये शब्द मेरे दिल-दिमाग को तीर के समान लगे। तभी संकल्प किया - चाहे कुछ भी हो जाए, मैं अपना ब्रह्माकुमारी जीवन बहुत अच्छी तरह से जीऊंगी। जैसे बाबा कहते हैं, "ओखली में मुंह डाला है तो कूट के दिखाओ" - यही दादी जी के भी शब्द थे। दादी जी की दी हुई दिव्य शिक्षाएं आज भी मुझे बल और शक्ति देकर मार्गदर्शन करती हैं।

उनसे बहुत सुंदर पालना मिली। मुझे तीन महीने उनके साथ ऑफिस सेवा में रहने का सौभाग्य भी मिला, जहां मैंने उनके जीवन से अनेक छोटी-बड़ी बातें सीखीं।

ब्रह्माकुमारी तारा दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, गुजरात

ग्यारहवीं कक्षा की छुट्टियों में मैं मधुबन, माउंट आबू आई थी, जहाँ मेरी दादी जी से पहली बार मुलाकात हुई। उनका व्यक्तित्व अत्यंत प्रेरणादायक और प्रभावशाली था - उन्हें देखते ही उमंग और उत्साह जागृत हो जाता था। उनके बोलने के तरीके में इतना उत्साह होता था कि हर युवा उनसे प्रेरित होकर स्वयं में उमंग भर लेता था। पहली ही मुलाकात में मेरे मन में संकल्प आया कि मैं भी यूथ विंग से जुड़ूँगी और उनके सान्निध्य में रहने का अवसर प्राप्त करूँगी।

सन् 1985 में दादी जी ने युवा प्रभाग द्वारा एक मेगा और अनोखा प्रोजेक्ट - अखिल भारतीय युवा पदयात्रा - प्रारम्भ किया, जिसमें सदाचार, सात्विकता और नैतिकता का पालन करने वाले राजयोगी युवा भाई-बहनों ने भारत के कोने-कोने में जाकर ईश्वरीय ज्ञान का प्रसार किया। इससे सभी में नया उमंग और उत्साह जागा कि युवा एक नए भारत की स्वर्णिम कहानी रच सकते हैं।

इस यात्रा के दौरान मैंने उनकी विशेषता देखी - वे हर किसी की छिपी हुई विशेषताओं को पहचानकर निखारती थीं। यदि किसी को स्वयं में कोई विशेषता न दिखे, तब भी वे उसमें कोई न कोई गुण देखकर उसे आगे बढ़ाती थीं। इसी कारण सभी उन्हें अलौकिक माँ के रूप में स्वीकार करते थे।

दादी जी को अमृतवेला योग और मुरली में विशेष रुचि थी। किसी भी सेवा कार्यक्रम के पूर्ण होने पर वे स्नेहपूर्वक कहतीं - "अच्छा, अब आगे क्या करना है, उसका प्लान बनाओ।" वे एक अत्यंत सफल और कुशल मेंटर, गाइड और टीचर थीं।

ब्रह्माकुमारी अनसूया दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, दिल्ली


世界宗教會議
WORLD RELIGION

दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

अब हमें यह अभ्यास करना है कि परमात्म ज्ञान के महावाक्य सदा स्मृति में रहें और उनसे हमारी खुशी निरंतर बनी रहे। जब भीतर सच्ची खुशी होती है, तो जो भी हमारे सामने आता है, वह हमारे चेहरे से ही उस खुशी की झलक अनुभव करता है। जब आप किसी से मिलते हैं, तो बात करने से खुशी मिलती है।

अब यह अभ्यास करो - केवल शब्दों से नहीं, बल्कि मुस्कुराते चेहरे से मिलो; मिलते रहो, खुशियाँ देते रहो और खुशियाँ लेते रहो। क्योंकि आने वाले समय में यही अभ्यास हमारे बहुत काम आने वाला है।

ॐ शांति



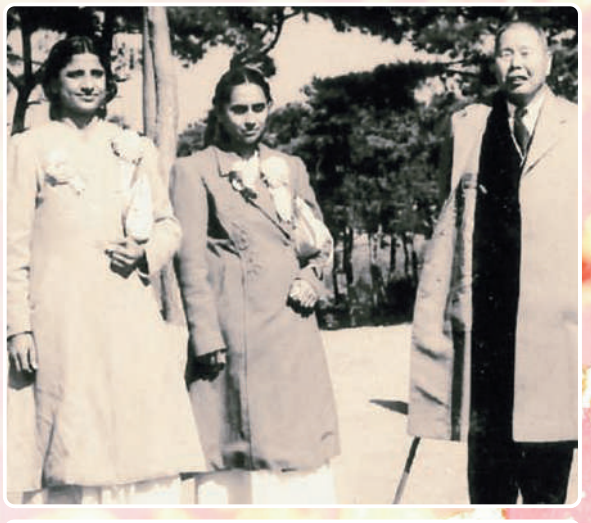


三五教國際總本部




SPEAKER
陳述者

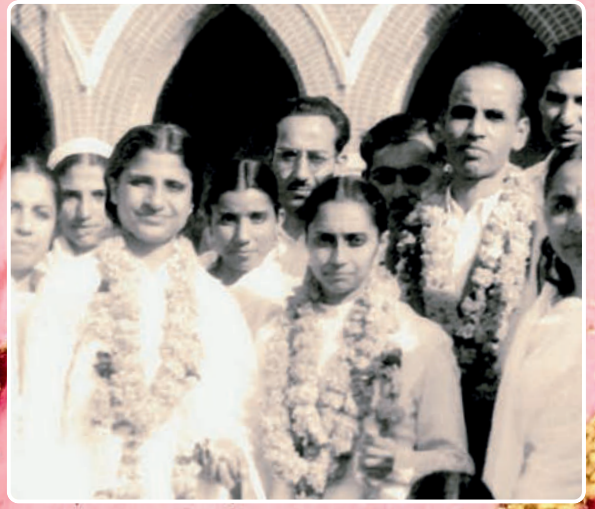

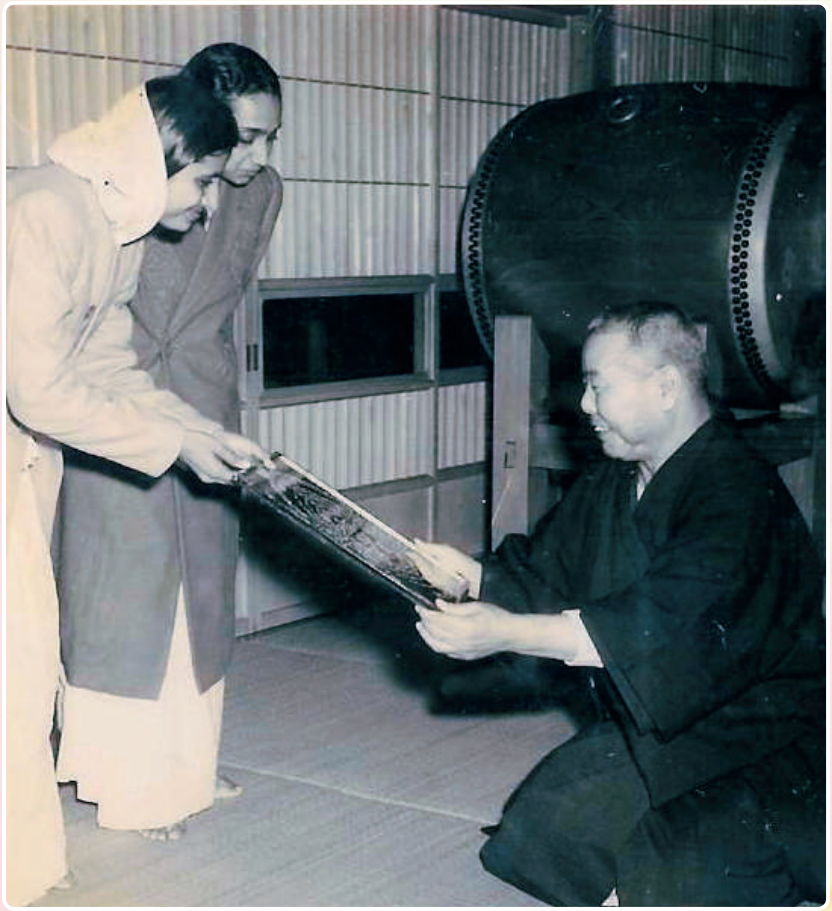












Purity
of a

वसुधैव कुटुम्बकम् की दिव्य ज्योति को प्रज्ज्वलित करने वाली आध्यात्मिक प्रकाशस्तम्भ

मैं 20 वर्ष की थी जब पहली बार दादी रतन मोहिनी जी से मुलाकात हुई। वे मेरी ट्रेनिंग टीचर थीं। उनके मन में सभी के लिए कल्याण की भावना थी, इसलिए प्रशिक्षण में किसी कुमारी से गलती होने पर वह निसंकोच उनसे पूछती। दादी जी स्नेहपूर्वक सुधार की युक्ति बतातीं - उनकी समझाने की शैली ऐसी थी कि किसी को बुरा नहीं लगता था।

सत्यता के सार्वभौमिक सिद्धांत उनके आध्यात्मिक जीवन की नींव थे। दिनचर्या पूर्ण होने पर वे पूछतीं - "क्या आज किसी को झूठ तो नहीं बोला?" यदि किसी ने किसी कारण, जैसे किसी को खुश करने के लिए भी झूठ कहा होता, तो वे समझातीं कि ब्रह्माकुमारी जीवन का हर कर्म सत्यता पर आधारित होना चाहिए।

सन् 1954 में जब वे जापान आईं, तब भाषण तैयार थे, पर अधिकांश समय वे राजयोग अभ्यास में रहती थीं। योग की शिफ्ट के साथ वे घर-घर और दुकानों पर जाकर पर्चे बाँटती थीं। न पर्याप्त आर्थिक सहयोग था, न भाषा आती थी, फिर भी दृढ़ता, सृजनात्मकता और विल पावर से नए उपाय बनाकर उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

एक बार 15 दिनों के कार्यक्रम में भोजन की कमी होने पर वे चावल और जापानी फल से ही संतोष कर लेतीं और बाहर का भोजन नहीं लेतीं। यह बात बाबा को लिखने पर उन्होंने ब्रेड खाने की अनुमति दी, पर दादी जी ने उत्तर दिया कि यदि बाबा ब्रेड नहीं खाते, तो वे भी नहीं खाएँगी। ऐसी दृढ़ता और आत्मसंयम से वे सेवा करती थीं। वे प्रतिदिन 2–2.5 किलोमीटर पैदल चलतीं - न साधन थे, न किराया - और सुबह से ही अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर एक-एक दुकान पर परमात्मा का संदेश देती थीं।

मुझे उनके साथ जापान में सेवा-यात्रा का अवसर मिला। एक घटना अविस्मरणीय है - एक बौद्ध महिला का हाथ पकड़कर, रूहानी दृष्टि से उन्होंने उसे इतना सम्मान और अपनापन दिया कि उसकी आँखें नम हो गईं। वे कभी धर्म या भाषा नहीं देखती थीं - आत्मिक दृष्टि से सभी को अपनापन देती थीं।

उन्होंने अपने जीवन को इतना अनुशासित बनाया था कि किसी भी परिस्थिति में आध्यात्मिक दिनचर्या पर अडिग रहती थीं। परमात्मा में अटूट निश्चय के कारण वे दीर्घ आयु में भी पूर्णतः स्वस्थ और सक्रिय रहीं।

मुरली पढ़ना-लिखना उनकी मानो हॉबी थी। जापान में भी वे दिनभर मुरली में लगी रहती थीं। जब मैं जापान से समूह लेकर माउंट आबू आती, तो वे मुरली पर प्रश्नोत्तर कराते हुए रमणीक व गुह्य ज्ञान सुनाती थीं।

एक बार 28 लोगों का समूह जापान से माउंट आबू आया। दादी जी ने स्नेहपूर्वक राखी बाँधी, दृष्टि दी, कोर्स कराया और पीस पार्क में पिकनिक भी करवाई। उनके अपनत्व से प्रभावित होकर बाद में उनमें से दो लोग जापान में सेवा केंद्र खोलने के निमित्त बने। ऐसे दादी जी ने जापान में भी सेवा की नींव रखी।

दादी जी की दृढ़ता, रचनात्मकता, समयबद्धता और स्नेह ने उनके जीवन को सदा के लिए मानवता के लिए एक आदर्श उदाहरण बना दिया है।

ब्रह्माकुमारी रजनी दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, जापान



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

परमात्मा के बच्चों का चेहरा सदा खुशनुमा होना चाहिए। यदि हमारे अंदर कोई इच्छा, आवश्यकता या किसी बात की कमी का अनुभव होता है, तो खुशी कम हो जाती है - इसलिए हमें अपने अंदर नियमित रूप से चेकिंग करनी चाहिए।

परमात्म ज्ञान के महावाक्यों का, जितना संभव हो, थोड़ा समय निकालकर प्रतिदिन मनन-चिंतन करें। जो भी मनन-चिंतन चलता है, उसे अपनी डायरी में नोट करें। इस अभ्यास से यदि कभी भूल भी जाएँ, तो पुनः पढ़कर उसे जागृत कर सकते हैं और इससे और भी गहरे, सुंदर ज्ञान के विचार उत्पन्न होते हैं।

ॐ शांति









दादी जी ने भारत के अनेक शहरों में ईश्वरीय सेवा की मजबूत नींव रखी

दादी रतनमोहिनी जी से मेरी पहली मुलाकात मुंबई में 1952 में हुई। उस समय दादी शीलइंद्रा जी और दादी रतनमोहिनी जी मुंबई - कोलाबा एरिया में एक फ्लैट में रहती थीं जहां से बाबा की श्रीमत से सेवा का बहुत ही विस्तार हुआ।

मेरी लौकिक आयु तब 11 साल की थी और मेरा लौकिक परिवार मुंबई माटुंगा किंग सर्कल के पास रहता था। मेरे घर के सामने ही लौकिक नानी मां का घर था। नानी मां को जब ज्ञान मिला तो वह तुरंत निश्चय बुद्धि बन गईं और उनके घर में पाठशाला भी शुरू हुई। साकार बाबा, मम्मा का भी वहां कई बार आना हुआ।

सप्ताह में एक बार, दादी रतनमोहिनी जी कोलाबा से माटुंगा पाठशाला में आती थीं। बाबा का ज्ञान दादी जी बहुत प्यार और लगन से सुनाती थीं और हम बस सुनते ही रहते थे। दादी जी में मैंने सिखाने की कला देखी। उस समय दादी जी से मैंने बहुत कुछ सीखा - जैसे नए जिज्ञासुओं से कैसे बात करनी है, उन्हें कोर्स कराना, भोग बनाना आदि।

मैं तो आयु में छोटी थी, दादी जी के प्यार ने, सीखाने के भाव ने मुझे ईश्वरीय परिवार और राजयोग के प्रति आकर्षित किया। मैं धीरे-धीरे सब कुछ सीखती गई।

मुंबई में, सेवा के प्रारंभ के समय में, सेवा की वृद्धि में दादीजी का विशेष रोल रहा। जहां भी जिस एरिया में निमंत्रण मिलता था दादी जी तुरंत हाजिर हो जाती थीं। दादी जी में शुरू से ही दृढ़ आत्मबल और ज्ञान सुनाने की स्फूर्ति, चुस्ती और मस्ती थी।

सन् 1958 में साकार बाबा के डायरेक्शन से मेरा कोलकता सेवार्थ जाना हुआ जहां मैं 12 साल ईश्वरीय सेवा पर रही। जब मैं कोलकता गई तब दादी वहां सेवा पर थीं। एक पुराने भाई ने सेवार्थ मकान दिया था, जहां सेवा चल रही थी। उस स्थान पर भी बहुत हलचल की बातें आईं लेकिन मैंने देखा दादी ने कैसे निश्चय बुद्धि बनके ज्ञान से ही सब समस्याओं का समाधान किया। ऐसे दादी जी ने कोलकाता में भी ईश्वरीय सेवाओं का बीजारोपण किया।

सन् 1969 - मई में दादी प्रकाशमणिजी ने मुझे राजकोट भेजा और जून 1969 में ही राजकोट रेसकोर्स ग्राउंड में बहुत बड़ी प्रदर्शनी लगाई गई तब दादी रतनमोहिनी जी का राजकोट में प्रथम बार आना हुआ। दादी जी की उपस्थिति ने मुझे बिल्कुल निश्चिंत और हल्का कर दिया। मैंने देखा दादी जी अथक होकर लगन से, ज्ञान की ललकार ऐसे करती थीं जैसे शेरनी शक्ति। प्रथम प्रदर्शनी से ही बाबा के कई छिपे रत्न निकले।

दादी जी से मेरी अंतिम मुलाकात 2024 में हुई। दादी जी को देखते ही ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैं एक उड़ते हुए, हँसते हुए फरिश्ते को देख रही हूँ। दादी तो संपन्नता और संपूर्णता की मशाल लगती थीं। दादी जी ने मुझे प्यार से दृष्टि दी और इशारे से कुछ रूह-रिहान भी की। मैंने दादी को राखी बाँधी। ऐसी थीं हम सबकी मीठी, ज्ञान-रत्नों से खेलने वाली दादी रतनमोहिनी जी।

ब्रह्माकुमारी भारती दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, राजकोट






FOUNDATION STONE LAYING
CEREMONY
OM NIWAS - MUMBAI

दादी जी उमंग-उत्साह की जागती ज्योति थीं - "थकना" शब्द उनके जीवन में नहीं था

जहाँ तक मुझे स्मरण है, रतनमोहिनी दादी जी को मैंने पहली बार 1963 में मुंबई के वाटरल्यू मेन्शन सेंटर पर देखा था। बाद में जब गामदेवी में नया सेंटर बना, तब हम छोटी-छोटी कन्याएँ वहाँ दादी जी के पास ट्रेनिंग लेने जाया करती थीं। उस समय मेरी आयु लगभग 14 वर्ष थी। दादी हमें बड़े स्नेह से सिखातीं और विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण देती थीं - जैसे भाषण कैसे देना है, 7 दिन का राजयोग कोर्स किस प्रकार कराना है और सेवा को कैसे आगे बढ़ाना है।

दादी जी की डिक्शनरी में "ना" शब्द मानो था ही नहीं। उनमें मैंने सदैव अपार उत्साह और उमंग देखा। उसी उत्साह के साथ वे हमें प्रशिक्षण देतीं और सेवा के लिए निरंतर प्रेरित करती रहती थीं। जब हमने सांता क्रूज़ में नया सेंटर खोला, तब दादी जी सेवा में सहयोग देने के लिए अक्सर वहाँ आती थीं। कोई भी सेवा कार्यक्रम होता, तो दादी जी अवश्य आती थीं। कभी हमारे यहाँ रोटरी में प्रोग्राम होता, तो कभी हम बड़ी प्रदर्शनी आयोजित करते थे। ऐसे अवसरों पर हम दादी जी को भाषण के लिए भी आमंत्रित करते थे।

एक बार हमने एक दिन की प्रदर्शनी रखी थी। उस दिन सुबह से रात तक बहुत लोग आते रहे। शाम को बातचीत में मैंने दादी जी से कह दिया, "दादी, आज तो हम लोग बहुत थक गए हैं।" मेरे मुँह से "थक गए" शब्द निकल गया। तब दादी जी ने स्नेह से समझाया, "देखो, हमारी जीवन में 'थकना' शब्द होता ही नहीं है।" दादी जी की यही विशेषता थी कि वे सबको बहुत प्यार से समझाती थीं। यदि किसी में कोई संस्कार दिखाई देता, तो उसे परिवर्तन करने के लिए भी दादी बहुत प्रेमपूर्वक समझाती थीं। यदि किसी से कोई गलती हो जाती, तब भी वे बहुत प्यार से समझाती थीं। दादी जी में तीन विशेषताएँ मैंने सदा देखीं - वे हर कार्य में सटीक, सक्रिय और सदैव सजग रहती थीं।

सन् 1967 में जब मैं मधुबन गई थी तब दादी जी हमें ट्रेनिंग देती थीं। पार्टियाँ आने पर वे स्वयं सिखाती थीं कि खाना कैसे बनाते हैं, रोटियाँ कैसे बनानी हैं और पार्टियों को कैसे परोसना है। दादी जी स्वयं खड़ी होकर यह सब कार्य करतीं और हम छोटी कन्याओं से भी कराती थीं।

दादी जी की एक और विशेषता उनकी दृढ़ता की शक्ति थी। दादी जी जो भी कार्य करती थीं, उसे दृढ़ संकल्प के साथ पूरा करती थीं। उन्हें पढ़ने में बहुत रुचि थी। वे मुरली का गहराई से अध्ययन करतीं और उसके सार को लिखकर नोट्स बनाती थीं। इसी कारण बाबा ने उन्हें प्रकाशमणि दादी जी के साथ 1954 में कॉन्फ्रेंस के लिए जापान भेजा था।

दादी जी हमें एकाग्रता पर अनेक क्लासेस करवाती थीं तथा विभिन्न प्रकार की तपस्या और योग भट्टियाँ भी कराती थीं। मुंबई में जब दादी जी रहती थीं और जब बाबा या मम्मा आते थे, तब वे सदा उनके अंग-संग रहकर सभी दिशानिर्देश लेकर सेवा करती थीं। बाद के दिनों में जब कभी स्वास्थ्य लाभ के लिए दादी जी मुंबई आती थीं, तब भी वे सदा मुस्कुराती हुई, अत्यंत हल्की, फ़रिश्ते-सी रहती थीं। उन्हें देखकर डॉक्टर, स्टाफ और अन्य लोग भी प्रसन्न हो जाते थे। दादी जी की यही सकारात्मकता उनकी दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य थी।

ऐसी महान आत्मा का सान्निध्य हमारे जीवन के लिए एक अमूल्य वरदान रहा। दादी जी का स्नेह, उनकी शिक्षाएँ और उनकी सकारात्मकता सदा हमारे जीवन-पथ को आलोकित करती रहेंगी।

ब्रह्माकुमारी योगिनी दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, मुंबई



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

ये गीत अंदर में पक्का करो—"मैं शुद्ध आत्मा हूँ, मेरा पिता परमात्मा सर्वशक्तिवान है; ऐसे पिता की मैं संतान हूँ, मुझे और क्या चाहिए?" जब मेरा पिता सर्वशक्तिवान है, जानी-जाननहार है, तो मुझे क्यों फिक्र करनी चाहिए? जब हम फिक्र से मुक्त रहते हैं, तब हमारे सारे कार्य स्वतः सिद्ध हो जाते हैं।

यदि हम फिक्र करते रहते हैं, तो चिंता में बुद्धि स्पष्ट नहीं रहती - क्या करें, किससे मदद लें - इस प्रकार बुद्धि-योग भटकने लगता है। इसलिए अपने बुद्धि-योग को एकरस बनाए रखें। इसके लिए जो अच्छी बातें हम सुनते हैं, उन्हें बार-बार अंदर में पक्का करते रहें। रोज़ जो भी सुनें, उसका मनन करें - देखो, कैसे मन की स्थिति में स्वतः परिवर्तन आ जाता है।

ॐ शांति


STIVAL 2001
URATION


'Youth Retreat' On
The Role of Youth in
Social Reconstruction
29th June to 3rd July, 2006 at Gyan Sarovar, Mt. Abu
Orgd.By: Youth Wing &
Brahma Kumaris
Dadi Ratan Mohini



रतनमोहिनी दादी जी: सेवा, साधना और स्नेह की सजीव प्रतिमूर्ति

आदरणीया दादी रतनमोहिनी जी केवल ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका ही नहीं थीं, बल्कि मातृत्व, मार्गदर्शन, अनुशासन, संगठन क्षमता और दिव्यता की साक्षात् जीवंत प्रतिमूर्ति थीं। उनका सम्पूर्ण जीवन परमात्मा की सेवा, आत्मिक उत्थान और मानव कल्याण के लिए समर्पित रहा। वे जहाँ भी रहीं, वहाँ व्यवस्था, पवित्रता, शांति और प्रेरणा स्वतः स्थापित हो जाती थी।

दादी जी संस्था के सेवाधारी एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट की संपूर्ण व्यवस्था स्वयं देखती थीं। उनके कार्य में अद्भुत परफेक्शन दिखाई देता था। वे प्रत्येक फाइल को स्वयं जांचती थीं और सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरण पर भी उनका विशेष ध्यान रहता था। उनका प्रशासन केवल नियमों पर नहीं, बल्कि आत्मिक समझ, स्नेह और विवेक पर आधारित था।

सन् 1969 का वह प्रथम मिलन जीवन का अमूल्य क्षण बन गया, जब कुमारियों के लिए आयोजित ट्रेनिंग प्रोग्राम में दादी जी का सान्निध्य पूरे एक माह तक मिला। उसी समय उनकी गहरी परख शक्ति, तीव्र निर्णय क्षमता और आत्मिक दृष्टि का अनुभव हुआ। उन्होंने मुझे मॉनिटर की जिम्मेदारी सौंपी और वहीं से एक गहरा आत्मिक रिश्ता स्थापित हुआ जो जीवन भर चलता रहा। उनकी दृष्टि में विश्वास, वाणी में शक्ति और कर्म में कल्याण की भावना स्पष्ट झलकती थी।

अपने जीवनकाल में उन्होंने असंख्य ब्रह्माकुमारी बहनों को प्रशिक्षण देकर देश-विदेश की सेवाओं के लिए तैयार किया, जो आज भारत की आध्यात्मिक संस्कृति को विश्व पटल पर प्रकाशित कर रही हैं - यह उनकी दूरदृष्टि और तपस्या का प्रतिफल है। दादी जी का शिक्षण तरीका अत्यंत विलक्षण था; वे आदेश या उपदेश देने के बजाय अपने आचरण से सिखातीं और हर कार्य को सुंदर, सरल व प्रभावी ढंग से करने का मार्गदर्शन देती थीं। इसलिए उनके सान्निध्य में सेवा करना स्वयं एक साधना बन जाता था।

युवा प्रभाग की स्थापना के समय दादी जी का दूरदर्शी नेतृत्व स्पष्ट था। प्रारंभ में वे स्वयं विभिन्न स्थानों पर जाकर युवाओं के कार्यक्रमों में भाग लेतीं और मार्गदर्शन करती थीं। उनकी संकल्प शक्ति, संगठन क्षमता और अथक परिश्रम ने लाखों युवाओं के जीवन की दिशा बदल दी। उनके प्रोजेक्ट केवल योजनाएँ नहीं, बल्कि परमात्म प्रेरित संकल्पों की साकार अभिव्यक्ति थे।

शीघ्र ही उन्होंने संपूर्ण जिम्मेदारी सौंपते हुए कहा - "चंद्रिका, अब यह सेवा आपको संभालनी है। मुझे आप पर पूरा विश्वास है।" यह विश्वास केवल शब्द नहीं, बल्कि एक दिव्य वरदान था। दादी जी का विशेष गुण था कि वे सेवाधारियों को आगे बढ़ाकर स्वयं पीछे रहकर मार्गदर्शिका बनती थीं, जिससे हर सेवाधारी आत्मनिर्भर, सक्षम और निर्भीक बनता था।

दादी जी के साथ कार्य करते हुए उनकी प्रबल संकल्प शक्ति का अनुभव होता था। कई बार वे कहती थीं - "हम तुम्हें याद कर रहे थे, आज इसी विषय पर बात करनी थी।" और वही विचार पहले से हमारे मन में चल रहा होता। यह आत्मिक जुड़ाव और सूक्ष्म संवाद सेवा को अत्यंत सहज और सफल बना देता था।

दादी जी का व्यक्तित्व गंभीरता और रमणीकता का अद्भुत संगम था। वे जितनी गम्भीर योगी थीं, उतनी ही सहज, सरल और वात्सल्यपूर्ण भी थीं। दादी जी के साथ बिताए अनगिनत क्षण - उनकी सूक्ष्म शिक्षा, मधुर मुस्कान और ममतामयी दृष्टि - जीवन की अनमोल पूंजी बन गए हैं।

ब्रह्माकुमारी चंद्रिका दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, गुजरात




PEACE
SENGER


Om Shanti



दादी जी का सहज स्वीकार भाव और नवीनता को पहचानने की अद्भुत दृष्टि

मुझे मधुबन में दादीजी के सानिध्य में 40 वर्षों तक रहने का अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ। दादीजी ज्ञान सागर की गहराई में जाकर अमूल्य ज्ञान रत्न प्राप्त करतीं और उन्हें हम सभी के साथ सहज भाव से साझा करती थीं। ज्ञान मंथन करने की कला मैंने विशेष रूप से दादी जी से ही सीखी।

दादी जी युवा प्रभाग की अध्यक्षा थीं और उन्होंने युवा प्रभाग की सेवाओं को अत्यंत ऊँचाइयों तक पहुँचाया। इतनी अधिक आयु होने के बावजूद भी दादीजी सदा सक्रिय रहती थीं, जिससे वे सदैव युवा ही प्रतीत होती थीं। वास्तव में दादीजी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे आध्यात्मिकता की साक्षात प्रतीक थीं। उनका जीवन त्याग, तपस्या और सेवा का अद्भुत संगम था। आज भी उनके मधुर वचन हर दिल को शांति और सुकून प्रदान करते हैं। दादीजी का सरल और विनम्र स्वभाव सभी को अपनापन अनुभव कराता था। वे सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक मातृत्व का सजीव स्वरूप थीं।

उनका हर कदम मानवता की सेवा के लिए समर्पित रहा। उनके मार्गदर्शन से आज भी लाखों आत्माएँ आत्मबल से भरकर अपना जीवन सुंदर रूप से जी रही हैं। दादी जी का जीवन हमें सकारात्मक सोच और श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देता है। उनका व्यक्तित्व शांति और शक्ति का अद्भुत संगम था।

उन्होंने समाज में नैतिक मूल्यों की ऐसी ज्योति प्रज्वलित की, जिसका प्रकाश आज भी सर्वत्र फैल रहा है। दादी जी का आशीर्वाद हर किसी के जीवन को उन्नति की ओर ले जाता है। हम सभी उनके दिव्य जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ, पवित्र और सेवामय बनाने का संकल्प लेते हैं।

ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश भाई
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, माउंट आबू

सन् 1979 में मैं पहली बार मुझे एक महीने के लिए पांडव भवन, माउंट आबू में रहने का अवसर मिला। उस वर्ष को संयुक्त राष्ट्र द्वारा "इंटरनेशनल ईयर ऑफ द चाइल्ड" के रूप में मनाया जा रहा था और संस्था द्वारा अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इन्हीं में से एक भाषण प्रतियोगिता में मैंने भाग लिया, जिसकी जज दादी जी थीं। उन्होंने मेरी विशेषताओं को पहचाना और वहीं से हमारे बीच एक पवित्र संबंध स्थापित हुआ।

सन् 1985 में मैं अहमदाबाद से दिल्ली युवाओं की पहली बैठक में गई, जहाँ जगदीश भाई जी और दादी जी भी थे। वहाँ मेरी हैंडराइटिंग देखकर दादी जी को लगा कि मैं उनके ऑफिस कार्यों में सहयोग कर सकती हूँ। तभी से उनके मार्गदर्शन में मेरी क्षमताएँ विकसित होती गईं और मैं ईश्वरीय सेवाओं में आगे बढ़ती गई। दादी जी ने मुझे बुलेटिन लिखना सिखाया। उस समय बुलेटिन हाथ से लिखे जाते थे - वे नीले पेन से लिखती थीं और बीच की जगह में मैं लाल पेन से लिखकर उन्हें सुनाती थी।

सन् 1984 में अहमदाबाद में हुए एक वर्षीय टीचर ट्रेनिंग कोर्स को मैंने अच्छी तरह समझा। 1985 में जीवन समर्पण के समय मैंने दादी जी से कहा कि ब्रह्मा कुमारी बनने के लिए पूर्ण प्रशिक्षण आवश्यक है। मैंने विषयों की सूची बनाकर उन्हें दी, और वे मुझे थ्योरी व प्रैक्टिकल प्रशिक्षण पर बड़ी बहनों की बैठकों में साझा करने के लिए कहती थीं। वे मुझसे पत्रों के उत्तर भी लिखवाती थीं - हमेशा इस भावना से कि ब्रह्मा बाबा होते तो क्या उत्तर देते।
उनकी तीन प्रमुख विशेषताएँ थीं - रचनात्मकता, नवाचार और अनुशासन। उनके व्यक्तित्व में सदा एक माँ की ममता और स्नेह झलकता था।

ब्रह्माकुमारी जागृति दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, गुजरात




UMARIS
rs of Servi
NEW YORK BOXING
I RATAN MOHINI





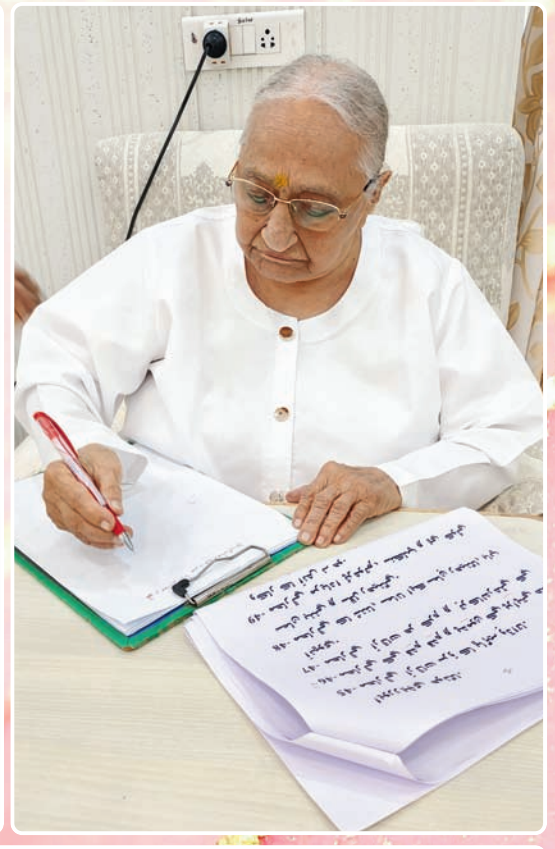


PEACE MESSENGER





दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

ब्रह्मा कुमार और ब्रह्मा कुमारियों का कर्तव्य है अपनी दिनचर्या, अपनी वृत्ति, दृष्टि, सब के नियम अपनी डायरी में एक बार नोट करो। सचमुच हमें अगर परमात्मा पिता भगवान का आज्ञाकारी बन के चलना है, स्वयं को चेक करते स्वयं को नियम से चलाएं। ऑटोमैटिकली जैसे कर्म मैं करेंगी मुझे देख कर और करेंगे।

तीव्र पुरुषार्थ की सहज विधि है - जो बात हमें लगता है कि हमें धारण करना ज़रूरी है उसके लिए हम दिल से प्रतिज्ञा करें। प्रतिज्ञा अर्थात दृढ़ संकल्प। तीव्र पुरुषार्थी की पहली निशानी है कि वो अपने अंदर दृढ़ संकल्प करेगा - मुझे ये करना ही है।

ॐ शांति

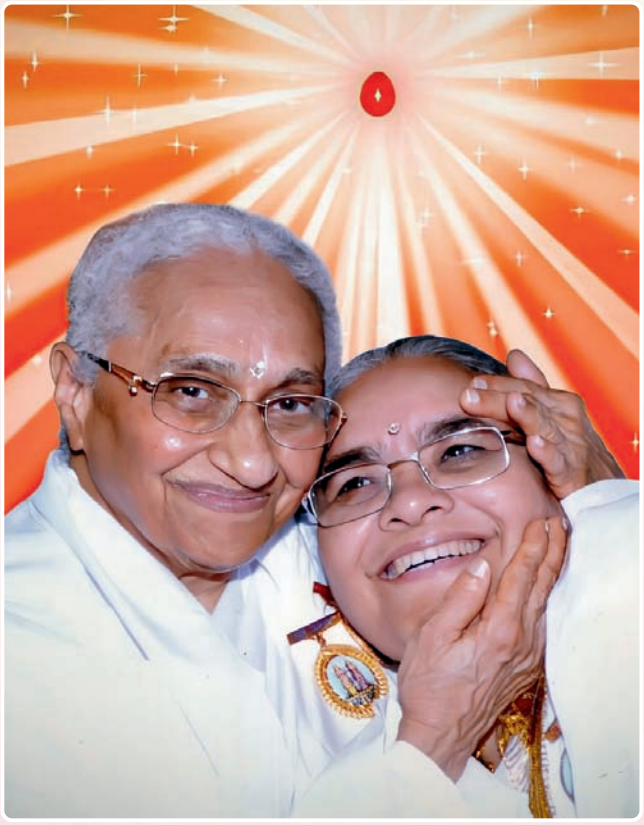






General Bipin Rawat

दादी जी ने समयबद्धता और हर कार्य में निपुणता का गुण सिखाया

सन् 1969 मैं मधुबन में भोली दादी जी के साथ रसोई में खाना बनाने की ड्यूटी करती थी। उसी समय प्रकाशमणि दादी जी ने मुझे रतनमोहिनी दादी जी की माता, देवी खुशी दादी जी के पास सेवा में भेजा। वहीं से मुझे रतनमोहिनी दादी जी की पालना का बहुत बड़ा सौभाग्य मिला। किचन सेवा के समय भोली दादी और रतनमोहिनी दादी जी मुझे सिंधी खाना बनाना भी बड़े प्यार से सिखाती थीं।

दोनों दादियों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। रतनमोहिनी दादी जी ने हमें हमेशा माँ की पालना और स्नेह का अनुभव कराया, जिसने मुझे जीवन में बहुत आगे बढ़ाया। जब भी मेरे जीवन में कोई मुश्किल आती, मैं तुरंत दादी जी के पास जाकर सब सुनाती। दादी जी बड़े प्यार से सुनतीं, समझातीं और दृष्टि देकर शक्ति भरतीं। इससे मन हल्का हो जाता और मैं स्वयं को सशक्त अनुभव करती। दादी जी का जितना शुक्रिया करें उतना कम है।

सन् 1970 में प्रकाशमणि दादी जी ने मुझे सरला दीदी जी के पास अहमदाबाद भेजा। वहाँ रहते हुए भी मुझे रतनमोहिनी दादी जी बहुत याद आती थीं। दादी जी ने मुझसे कहा था - "कैलाश बहन, आप जा रही हो तो अपनी जगह पर दूसरी अच्छी कुमारी को जरूर हमारे पास भेजना।" तब मैंने लीला बहन से कहा। लीला बहन बड़े प्यार से "हाँ जी" कहकर आबू आ गईं और अंत समय तक रतनमोहिनी दादी जी के साथ अथक सेवा करती रहीं।

एक बार मैं गांधीनगर से तीन-चार पेज का एक पत्र दादी जी के पास साइन कराने के लिए लेकर गई। दादी जी ने बड़े ध्यान से पूरा पत्र पढ़ा और कहा - "देखो कैलाश बहन, इस पत्र में ह्रस्व 'इ' और दीर्घ 'ई' में थोड़ी सी भूल है।" मुझे आश्चर्य हुआ कि इतनी बड़ी जिम्मेदारियाँ निभाते हुए भी दादी जी ने पूरा पत्र ध्यान से पढ़कर छोटी-सी भूल बताई और फिर साइन किया। तब मैंने सीखा कि दादी जी यज्ञ का हर कार्य बड़ी एक्यूरेसी और कुशलता से करती थीं। दादी जी ने मुझे यह भी कहा - "कैलाश, हमेशा जो भी लेटर या फॉर्म हों, पहले पढ़ो फिर साइन करो। पढ़े बिना साइन कभी नहीं करना चाहिए - ऐसा बाबा कहते थे।"

मैंने यह भी देखा कि दादी जी में प्रभावशाली नेतृत्व शक्ति के साथ सबके लिए रहम भावना भी थी। वे बड़े प्यार से समझाती थीं। दादी जी हम सबके लिए निर्माणता की मूर्ति थीं। वे छोटे-बड़े सभी से प्रेम से मिलतीं, सिखातीं और आगे बढ़ाती थीं।

दादी जी को हर कार्य एक्यूरेट ही पसंद था। वे कभी भी किसी काम को जैसे-तैसे नहीं चलने देती थीं। उन्हें झूठ बिल्कुल पसंद नहीं था। वे कहती थीं - "सच तो बिठो नच।" सचमुच दादी जी हम सबके लिए एक सैंपल थीं। उनके चरित्र से मम्मा-बाबा की भासना आती थी। उन्होंने पूरे ब्राह्मण परिवार से सदा दुआएँ ही लीं।

हम सभी ब्राह्मण परिवार के लिए यह गौरव की बात है कि आदरणीय दादी जी ने यज्ञ की शुरुआत से लेकर अपने जीवन के 100 वर्ष तक हड्डी-हड्डी सेवा करके अपना जीवन सफल किया और हम सबको भी हड्डी-हड्डी सेवा करना सिखाया।

सचमुच ऐसी प्रेरणामूर्ति दादी जी ने अपना पूरा जीवन परमात्मा के इस विश्व परिवर्तन के महान कार्य में सफल किया।

ब्रह्माकुमारी कैलाश दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, गांधीनगर, गुजरात













दादी जी का दिव्य जीवन—प्रेरणा, पवित्रता और आत्मिक प्रकाश का सजीव उदाहरण

रतन मोहिनी दादी का जीवन स्वच्छ दर्पण के समान था। वे अनेक दिव्य शक्तियों से ओत-प्रोत थीं और सदा उमंग-उत्साह से परिपूर्ण महान युवा शक्ति थीं। वे ज्ञान, गुणों और शक्तियों से स्वयं को जागृत रखतीं और हम सबको भी रूहानी आभा से सजाती रहती थीं। प्रारम्भ से ही यज्ञ सेवाओं में उनका अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा।

वे एक तपस्वी आत्मा थीं, जिनके सान्निध्य में आते ही मन सहज ही गहरी शांति का अनुभव करता था। संस्था के आदि से ही संगठन के साथ रहकर, पावन देवी-समान जीवन जीते हुए, उन्होंने ईश्वरीय मर्यादाओं और अनुशासन की रक्षक के रूप में आजीवन विश्व कल्याण के कार्य में तत्पर रहने का दृढ़ संकल्प निभाया।

वे सदा आत्मसात करते हुए दिव्य गुणों की विभूति बनने के पुरुषार्थ में लगी रहती थीं। ज्ञान में विशेष रुचि होने के कारण वे मुरली को बड़े लगन से पढ़तीं और प्रेमपूर्वक सबको सुनाती थीं।

वे हम सबकी ट्रेनिंग टीचर भी थीं। वे हमें प्रेरित करती थीं कि जितना हम ईश्वरीय संबंधों का रसास्वादन करेंगे, उतना ही मनोबल बढ़ेगा और हम ज्ञान, गुण व शक्तियों से सम्पन्न बनेंगे। उनसे मिलने पर उनकी रूहानी दृष्टि, मुस्कुराता चेहरा और वाणी यही प्रेरणा देती थी - "गुलाब की तरह खिले रहो और खुशबूदार बनो।"

दादी जी के लिए यह सार्थक है कि - 'आचरण ही उपदेश हैं, जीवन ही सन्देश है, धर्म ही धारणा है।'

ब्रह्माकुमारी शुक्ला दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, दिल्ली

सन् 1968 में मुझे राजयोग का ज्ञान मिला और मैं बेंगलुरु सेवा केंद्र पर हृदय पुष्पा दादी जी के साथ रहती थी। प्रशिक्षण के लिए मधुबन आती थी, तब दादी रतन मोहिनी जी को देखती - एकदम सक्रिय, चुस्त और हर कार्य में आगे। उनके साथ गहरा संबंध मलेशिया जाने के बाद बना। उनकी क्लासेस का अनुवाद करते समय बहुत अच्छा लगता था - वे ज्ञान की प्रत्येक बात को सूक्ष्म से भी सूक्ष्म रीति से समझाती थीं।

इंटरनेशनल यूथ फोरम में विश्व के अनेक देशों से आए युवाओं में दादी जी उमंग, उत्साह भरकर विश्व कल्याण के लिए प्रेरित करती थीं। उनमें ऐसी शक्ति थी कि हजारों की सभा में मंच पर आते ही, बिना कुछ कहे, बिना गीत के ही गहरी शांति का वातावरण बन जाता और सब शांत हो जाते थे।

दादी जी में अंतर्मुखता का गुण स्पष्ट दिखाई देता था। उनके शब्दों का चयन अत्यंत सटीक होता था। वे अधिकतर शांत रहतीं, पर जब बोलतीं तो हर हृदय को स्पर्श करतीं - उनकी वाणी में एक अनूठी शक्ति होती थी।

वे एक विद्यार्थी की भाँति सदैव सीखने के दृष्टिकोण से गुणग्राही रहीं। अनुशासन, समयबद्धता और निपुणता उनके प्रमुख गुण थे। वे "हाँ जी" कहते हुए निरंतर आगे बढ़ती रहीं। निजी जीवन में अत्यंत सुव्यवस्थित थीं - हर वस्तु अपनी जगह पर रखतीं और कहतीं कि अँधेरे में भी ढूँढो तो मिल जाए। दादी जी एक अनोखा हीरा थीं - ज्ञान की खान, योग और तपस्या की चैतन्य मूर्ति, जिनकी स्नेहभरी पालना ने मुझे आगे बढ़ाया।

ब्रह्माकुमारी मीरा दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, मलेशिया



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

पवित्रता और दिव्यता की शक्ति - ये दो मुख्य बातें हमें अपने जीवन में धारण करनी हैं। तभी हम पूज्य मूर्ति बन सकते हैं। मूर्ति अर्थात सर्व की मान्य, सर्व की दृष्टि में सम्माननीय।

सर्व के पूज्य बनने का अर्थ है कि हम स्वयं को सदा शृंगारित मूर्ति के रूप में रखें - एक ओर पवित्रता की शक्ति और दूसरी ओर दिव्यता की शक्ति। दिव्यता अर्थात दैवी गुण, जो हमारी कर्मेन्द्रियों की चंचलता को समाप्त कर देते हैं। तब संकल्प मात्र भी अशुभ भावना या विकार की दृष्टि जागृत नहीं हो सकती। ऐसी हम सदा दिव्यता से शृंगारी हुई मूर्ति बने रहें तो हम पूज्य मूर्ति बन जाएंगे।

ॐ शांति











दादी जी आजीवन सदा सेवा में तत्पर रहीं, सदा रेडी और सदा एक्टिव

आदरणीया दादी रतनमोहिनी जी सजगता, सटीकता और सेवा में सदैव सक्रिय रहने की सजीव प्रतिमूर्ति थीं। सन् 1974 में मेरे आध्यात्मिक जन्म के समय से ही मुझे उनके सान्निध्य का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। बीते दशकों में मैंने देखा कि वे किस प्रकार अथक रूप से आत्मिक उत्थान के लिए समर्पित रहीं - सदा सजग, सदा उपस्थित और सदा उद्देश्यपूर्ण।

यद्यपि वे सेवा में अत्यंत सक्रिय रहती थीं, फिर भी उनका विशेष स्नेह युवाओं के प्रति था। वे वास्तव में "युवाओं की दादी" थीं, जो निरंतर केवल समर्पित बहनों और भाइयों को ही नहीं, बल्कि विश्वभर के युवा राजयोगियों को प्रोत्साहित करतीं, मार्गदर्शन देतीं और उनका स्नेहपूर्वक ध्यान रखती थीं। मधुबन में जब भी दादी जी से मिलने का अवसर मिलता, उनकी आत्मीयता मेरे हृदय पर गहरी और स्थायी छाप छोड़ती। प्रत्येक मिलन में व्यक्तिगत ध्यान और आत्मिक पालना का अनुभव होता था।

अपनी वैश्विक जिम्मेदारियों और उल्लेखनीय उपलब्धियों के बावजूद दादी अत्यंत विनम्र रहीं। वे विश्व धर्म संसद (Parliament of the World's Religions) में जाने वाले ब्रह्माकुमारी प्रतिनिधिमंडल की प्रथम सदस्यों में से एक थीं और उन्होंने अनेक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं का नेतृत्व किया। फिर भी प्रत्येक मुलाकात और वार्ता में उनकी विनम्रता स्पष्ट झलकती थी। उन्होंने कभी भी पद या सम्मान को दूरी का कारण नहीं बनने दिया - बल्कि वे हर व्यक्ति को सम्मानित और महत्वपूर्ण होने का अनुभव कराती थीं|

मुझे यह सौभाग्य भी प्राप्त हुआ कि मैंने दादी को ब्रैडफर्ड (यूके), यूएई, मस्कट और अन्य स्थानों पर आतिथ्य प्रदान किया। वे जहाँ भी गईं, वहाँ सदा सेवा में तत्पर रहीं - सहज, कोमल और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने वाली। वे लोगों की पालना केवल बड़े और भव्य कार्यों से ही नहीं, बल्कि प्रेम और प्रोत्साहन से भरे सरल और सच्चे संवादों के माध्यम से करती थीं।

मेरे लिए दादी रतनमोहिनी जी सदैव समर्पण, विनम्रता और मातृत्वपूर्ण स्नेह का जीवंत उदाहरण रहेंगी - एक ऐसी मार्गदर्शिका ज्योति, जिसकी उपस्थिति आज भी सेवा और आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रेरणा देती रहती है।

ब्रह्माकुमारी ज्योति दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, दुबई – यूएई, ओमान, कतर


60






ANIVERSARY
25TH ANIVERSARY

दादी जी ने गुणों से पालना करके मेरा जीवन श्रेष्ठ बनाया

सन् 1975 में जब मैं मधुबन आई थी, तब दादी जी से मिलने का अवसर मिला। तभी से उनके ज्ञान की गहराई और ज्ञान-रत्नों को सुनाने का तरीका मुझे बहुत अच्छा लगा। दादी जी अपने अनुभवों की बातें अत्यंत गहराई से साझा करती थीं। उन्हें सुनते-सुनते ऐसा अनुभव होता मानो मैं स्वयं उन अनुभूतियों को महसूस कर रही हूँ।

उन्हें ज्ञान-रत्नों का बहुत शौक था। ज्ञान के हर पॉइंट का गहराई से चिंतन करने में विशेष रुचि थी, इसलिए उनका नाम "रतन मोहिनी" रखा गया। वे हमें निरंतर ज्ञान और योग की अनुभूतियों की गहराइयों में ले जाती थीं।

हम लगभग पंद्रह दिन वहाँ रहे और प्रतिदिन उनसे मिलते थे। वे छह–सात लोगों के छोटे समूह को बैठाकर हमसे बातें करतीं और बाद में प्यार से समझातीं कि जब हम किसी को ज्ञान सुनाएँ, तो उन्हें भी ऐसा ही अनुभव होना चाहिए। अगली बार जब मैं मधुबन आई, तो प्रकाशमणि दादी जी और बड़ी दीदी ने मुझे कुछ समय वहीं रहकर ट्रेनिंग लेने को कहा। उसी प्रशिक्षण के दौरान रतनमोहिनी दादी जी से और भी निकट संबंध बन गया।

मैं 8–9 माह मधुबन में रही। एक बार दादी जी ने कहा, "आपने सुना है कि आप आत्मा हैं, पर यह आत्मा कितनी सूक्ष्म, प्रकाश की बिंदु है - क्या उस प्रकाश की अनुभूति की है?" इस प्रकार कहते हुए दादी जी हमें उसका अनुभव भी कराती थीं।

दादी जी सबकी मनोस्थिति और मनोभावना को समझकर उनके समान बनकर बात करती थीं और ज्ञान को ऐसे सुनाती थीं कि सुनने वाले को सहज ही पसंद आए। इसी कारण युवा विशेष रूप से दादी जी की ओर आकर्षित होते थे।

दादी जी का स्वभाव बहुत सरल था। वे जटिल बातों को भी सहज रूप से समझाती थीं। संस्था के हजारों टीचर्स की ट्रेनिंग, सेंटर्स की व्यवस्था, सर्टिफिकेट्स और रिन्यूअल्स - सब दादी जी स्वयं संभालती थीं। दादी जी स्वयं बहुत अनुशासित थीं, श्रीमत की पक्की थीं और हर एक को प्यार से निश्चिंत और निर्विघ्न करती थीं।

दादियों के बीच अटूट विश्वास, स्नेह और सम्मान की भावना थी। श्रिमत उनके लिए पत्थर की लकीर के समान थी - दूसरा कोई विचार आता ही नहीं था। ऐसी विशेषता मैंने दुनिया में कहीं और नहीं देखी; एक ने कहा और दूसरे ने सहर्ष "हाँ जी" कहकर मान लिया। दादी रतनमोहिनी जी की भी यही बड़ी विशेषता थी।

यदि कोई परिवार दादी जी से मिलने आता और उनके प्रति अपना प्यार व सम्मान व्यक्त करता, तो दादी जी सामने से कहती थीं कि दादी का उनके प्रति और भी अधिक प्यार है। 14 वर्ष तपस्या करने के बाद भी दादी जी सदा नम्रता और निरहंकारिता की मूर्ति थीं।

ऐसी देवी-समान पवित्र और महान आत्मा का सान्निध्य मिलना मेरे लिए सौभाग्य रहा। उनका दिव्य व्यक्तित्व आज भी असंख्य आत्माओं के जीवन को प्रेरणा और शक्ति प्रदान करता है।

ब्रह्माकुमारी अंबिका दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, बेंगलुरु



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

योग में बैठते हैं, उस समय हमारे अंदर और कोई भी प्रकार का संकल्प नहीं रहना चाहिए। अपने अंदर देखना है कि हमारे अंदर सिवाय परमपिता शिव परमात्मा की याद के कुछ भी ना हो। भले हम उन्हें भिन्न-भिन्न रूपों से याद करें, लेकिन याद एक ही परमात्मा की रहे। उनके सिवाय और कोई भी बात हमारे मन में उस समय नहीं चलनी चाहिए।

योग माना कनेक्शन - मुझ आत्मा का कनेक्शन अपने परमात्मा के साथ। स्वयं को चेक करना है कि सचमुच जब हम योग में बैठे हैं, तो हमारी बुद्धि कहीं और तो नहीं जा रही। बुद्धि के अंदर और कोई भी प्रकार की याद, कोई भी और संकल्प नहीं उठना चाहिए - सिवाय परमात्मा की याद के।

ॐ शांति



दादी जी ज्ञान-रत्नों से सुसज्जित देवी-समान थीं

मैं शायद 16 वर्ष की थी जब पहली बार मधुबन में दादी जी से मिली। दादी जी ओम शांति भवन में हमारे साथ ही बैठकर मुरली सुनती थीं। दादी जी का जो प्रारम्भिक प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा, वह यह था कि मुरली सुनने, समझने और उत्तर देने में वे सबसे अधिक रुचि रखती थीं।

दादी जी सदा बहुत उमंग और उत्साह में रहती और तुरंत दूसरों को भी उमंग देती थीं। जब मैं पहली बार बाबा से मिलने मधुबन गई, तब मैं बाबा को देने के लिए एक पेंटिंग बनाकर ले गई थी। परंतु मैं थोड़ा हिचकिचा रही थी। तभी दादी रतनमोहिनी जी ने मुझे प्रेरित किया कि मैं आगे जाकर बाबा को वह पेंटिंग दूँ। उस पेंटिंग को देखकर बाबा ने मेरे जीवन के लिए एक वरदान दिया, मानो मेरे जीवन का रोडमैप ही बना दिया हो। पर उस क्षण तक पहुँचने की प्रेरणा मुझे दादी जी से ही मिली थी।

दादी जी में एकाग्रता का अद्भुत बल था। उन्हें अध्ययन का भी बहुत शौक था। वे इतनी लगन से मुरली सुनती थीं कि बाद में स्मृति से, शब्दशः पूरी मुरली लिख देती थीं। इसके लिए यदि उन्हें विश्राम का त्याग भी करना पड़े, तो भी वे तैयार रहती थीं, क्योंकि ज्ञान में गहरी रुचि और बाबा से अपार स्नेह था।

दादी जी के ऑफिस में लिफ्ट नहीं थी। मैंने देखा है कि 90 वर्ष की आयु में भी दादी जी अपने ऑफिस की सीढ़ियाँ स्वयं चढ़कर जाती थीं। जब अन्य युवा कुमारियाँ दादी जी को देखती थीं, तो वे बहुत प्रेरित होती थीं। दादी जी स्वयं सभी नियमों, मर्यादाओं और श्रीमत की रोल मॉडल थीं।

दादी जी कुमारियों की देखभाल ठीक उसी प्रकार करती थीं जैसे एक माँ अपनी बेटी के भविष्य के लिए चिंतित रहती है। संस्था में नियुक्त होने वाली नई टीचर्स की ट्रेनिंग का शेड्यूल और यहाँ तक कि प्रश्नपत्र भी दादी जी स्वयं बनवाती थीं। वे विशेष रूप से इस बात पर ज़ोर देती थीं कि प्रशिक्षण केवल दार्शनिक न रहे, बल्कि उसमें दिव्यता, गुणों का प्रयोग और व्यवहारिकता भी झलके। केंद्रों पर भेजे जाने के बाद भी वे प्रत्येक कुमारियों की प्रगति और व्यवस्थाओं का ध्यान रखती थीं। इसी कारण दादी जी एक आदर्श टीचर्स ट्रेनिंग इंचार्ज के रूप में जानी जाती थीं।

दादी जी स्नेहमय प्रशासन की साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। इतना व्यस्त रहने के बावजूद दादी जी सदा सभी से अत्यंत स्नेहपूर्वक मिलतीं और प्रसन्न करके ही विदा करती थीं। दादी जी आंतरिक प्रबंधन में अत्यंत निपुण थीं। वे व्यर्थ से मुक्त स्थिति में रहते हुए अपने मन को इस प्रकार संचालित करती थीं कि उनका शरीर भी उसी का अनुसरण करता था और वे हर कार्यक्रम व हर व्यक्ति के लिए उपलब्ध रहती थीं। उन्हें कभी थका हुआ या क्लास में झपकी लेते हुए नहीं देखा। दादी जी कहा करती थीं कि जब एक समूह मिलकर जाता और दूसरा आता, तो बीच के समय में वे अंतर्मन में गोता लगाकर ज्ञान-स्नान कर स्वयं को पुनः आध्यात्मिक ऊर्जा से भर लेती थीं।

दादी जी का यह दिव्य व्यक्तित्व सदा हमें श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देता रहेगा।

ब्रह्माकुमारी अनीता दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, चंडीगढ़








SOUTH KERALA BRANCHES

दादी जी की स्मृति कोई बीती हुई कहानी नहीं – वह आज भी मार्गदर्शन, प्रेरणा और एक अमर ज्योति है।

हमारी दादी जी आज भी हमारे बीच सूक्ष्म रूप से विद्यमान हैं। वे केवल प्रशासिका नहीं थीं, वे हम सभी की अलौकिक माँ थीं। उनका स्नेह, उनकी दृष्टि और उनकी प्रेरणाएँ आज भी हमारे हृदयों में स्नेह-ज्योति बनकर प्रज्वलित हैं।

बचपन से उनके सान्निध्य में रहने का जो सौभाग्य मिला, वह मेरे ब्राह्मण जीवन की अमूल्य निधि है। जब मैं मुंबई के गामदेवी सेंटर में रहती थी, तब कभी-कभी दादीजी और उनकी लौकिक माताजी, देवी माताजी (जो कोलाबा क्षेत्र के पास निवास करती थीं) से मिलने का अवसर मिलता था। जब भी मधुबन से टोली, मुरली नोट्स या कोई विशेष पत्र आता, मैं उसे स्नेहपूर्वक उनके पास लेकर जाती।

दादीजी का प्रत्येक शब्द प्रेरणा से भरा होता था। वे मुरलियों से विभिन्न विषयों पर गहराई से पॉइंट्स निकालने और चारों सब्जेक्ट्स - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा - को संतुलित रूप से जीवन में धारण करने का अभ्यास कराती थीं। कर्मयोग के अभ्यास पर उनका विशेष बल रहता था - "सेवा करते हुए भी आत्म-स्मृति अटल रहे" - यही उनकी जीवनशैली थी।

उनकी समयनिष्ठता स्वयं में एक तपस्या थी। चाहे कितने भी व्यस्त कार्यक्रम हों, एक दिन में कितने ही सेंटरों की यात्राएँ क्यों न हों, अनेक जिम्मेदारियाँ निभाते हुए भी वे सदा समय पर, सजग और एक्यूरेट रहती थीं। उनके जीवन से हमने सीखा - "अनुशासन ही आत्म-सम्मान है।" मुंबई जैसी मायावी नगरी के आकर्षणों के बीच स्वयं को सुरक्षित रखना उन्होंने सिखाया - "स्वयं को सेवा में व्यस्त रखो... ब्राह्मण परिवार तुम्हारी शक्ति है।"

मेरे लौकिक परिवार के बंधनों में भी उन्होंने युक्ति-युक्त चलना सिखाया। बंधनों से मुक्त होने में उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मेरा हाथ थामा और साहस दिया। हर परिस्थिति में संतुलन, हर निर्णय में धैर्य और हर कदम में मर्यादा - यह उनका दिया हुआ अमूल्य उपहार है।

चेन्नई में आदरणीया रोजी बहनजी के साथ रहने का भी मुझे सौभाग्य मिला। जब भी मैं मधुबन जाती, वे विशेष रूप से बुलाती थीं और कभी विशेष ऑफिस सेवाओं में सहयोग के लिए प्रेरित करती थीं - यह उनका विश्वास और स्नेह था।

मैं समय-समय पर अपना चार्ट भी उन्हें भेजती थी। अत्यंत व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद वे उत्तर लिखती थीं, ताकि ब्राह्मण जीवन में निरंतर उन्नति होती रहे। वे केवल सुधार नहीं बताती थीं - प्रोत्साहन देती थीं, आत्मविश्वास जगाती थीं। सेवा के नए आयाम, नवीन विचार और विस्तार की योजनाएँ वे प्रेमपूर्वक साझा करती थीं। वे कहती थीं - "याद और सेवा - यही दो पंख हैं। इनसे उड़ान भरो और सभी को साथ लेकर उड़ो।" मेरे जैसे अनेक टीचर्स को उचित मार्गदर्शन देकर आपने बाबा की सेवा में सेंटर पर रहने योग्य बनाया।

दादीजी, आपकी कमी शब्दों में नहीं बताई जा सकती... पर आपकी उपस्थिति आज भी अनुभव की जा सकती है। कभी-कभी लगता है - दादीजी सामने खड़ी हैं, स्नेहिल दृष्टि से देख रही हैं, मुस्कुरा रही हैं और धीरे से कह रही हैं - "थक मत... बाबा साथ है..."

ब्रह्माकुमारी बीना दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, चेन्नई



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

सुस्ती आत्मिक प्रगति में सबसे बड़ा बाधक है। जब हम ज्ञान की महत्ता को नहीं पहचानते, तब हमारे अंदर सुस्ती आती है। परमात्मा हमें ऊँचा बनाने के लिए निरंतर प्रयास करता है, परंतु हमें भी अपनी ओर से जागृति लानी है। यदि हम ज्ञान को गहराई से समझें और उसकी महिमा को जानें, तो हमारे अंदर उत्साह स्वतः जागृत होगा। इसलिए सुस्ती को त्यागकर, जागरूकता और उत्साह के साथ आगे बढ़ो - यही सच्चा पुरुषार्थ है।

ॐ शांति









संगठन शक्ति, प्रबंधन कौशल और अनुकूलनशीलता की अनुपम धनी

सन 1969 में संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा ने जब अपना पार्थिव शरीर त्याग किया, तब मैं अपनी माताजी और दिल्ली कमला नगर सेवा केंद्र के कुछ भाई-बहनों के साथ 20 जनवरी 1969 को मधुबन, माउंट आबू पहुँच गई थी। वहीं मैंने दादी जी को पहली बार देखा। लगभग 800 लोग वहाँ आ चुके थे। हिस्ट्री हॉल में 24 घंटे की योग-तपस्या भट्टी चल रही थी और दादी जी सभी को वहाँ सुव्यवस्थित रूप से बैठाने की सेवा कर रही थीं। तभी से उनमें संगठन की विशेष कला स्पष्ट दिखाई देती थी।

पांडव भवन तब बहुत छोटा था। मुझे याद है, दादी जी का कमरा तो जैसे कमरा था ही नहीं - सीढ़ी के नीचे एक छोटे से स्थान पर शेड डालकर बनाया गया था। उसमें दो चारपाइयाँ थीं, जहाँ दादी जी अपनी माताजी के साथ रहती थीं। उसी छोटे स्थान पर वे वर्षों तक बड़े आनंद से समायोजन करके रहीं - उनमें समायोजन की कला भी शुरू से ही थी।

संयुक्त राष्ट्र ने सन् 1985 को अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया था। उसी वर्ष ब्रह्माकुमारीज़ ने भी युवा प्रभाग का गठन किया। उस समय मैं इस युवा प्रभाग के दिल्ली चैप्टर की कोऑर्डिनेटर थी, और तभी दादी जी से अधिक समीपता का संबंध बना।

दादी जी न केवल युवा प्रभाग की चेयरपर्सन थीं, बल्कि वे स्वयं भी सच्चे अर्थों में युवा थीं। उनकी आवाज़ युवाओं सी बुलंद थी और उनका उमंग, उत्साह, सक्रियता और कार्यकुशलता युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत था।

रूस में ईश्वरीय सेवाओं की 13वीं वर्षगाँठ पर दादी जी रूस भी पधारी थीं। कार्यक्रम मुख्यतः रूसी भाषा में था। अंत में दादी जी का पार्ट था। हमने प्रयास किया कि उन्हें अधिक से अधिक कार्यक्रम हिंदी में समझा सकें, परंतु कितना ही बता पाए होंगे। फिर भी वे लगभग डेढ़ घंटे तक हॉल में पीछे बैठकर पूरा रूसी कार्यक्रम बड़े शांत और आनंदित भाव से देखती रहीं। उसके बाद उन्होंने मंच पर अपना प्रवचन दिया और सभी को योग की गहन अनुभूति कराई।

बाद में 25वीं वर्षगाँठ पर जब दादी जी फिर रूस आईं, तो जिस सेवा केंद्र पर हम रहते थे, वह इतना बड़ा नहीं था कि सभी मेहमानों को समायोजित कर सके। उसमें लिफ्ट भी नहीं थी और रहने की व्यवस्था तीसरी मंजिल पर थी। इसलिए हमने सेवा केंद्र से लगभग 10 मिनट की दूरी पर एक फ्लैट किराए पर लिया। दादी जी वहीं से प्रतिदिन क्लास कराने आती थीं, वहीं भोजन बनता था और वहीं से तैयार होकर सभी कार्यक्रमों में जाती थीं। उनके इस अनुकूलनशीलता के गुण ने ही उन्हें महान बनाया और उन्होंने अनेकों के दिलों पर राज किया।

दादी जी के जीवन में एक साथ तीनों प्रकार के गुण स्पष्ट दिखाई देते थे - बच्चों की मासूमियत और बाल-सुलभ सहजता, युवाओं की रमणीयता, ऊर्जा और जोश, तथा वानप्रस्थ की गंभीरता, चित्त की शांति और मौन।

ब्रह्माकुमारी सुधा दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, रूस


WELCOME
DEAR DADI







दादी जी का जीवन प्रभु-प्रेम, अनुशासन और मानव-सेवा का प्रेरक उदाहरण है

आदरणीया दादी रतनमोहिनी जी का संपूर्ण जीवन अलौकिक सेवा, दिव्य अनुशासन और उच्च आदर्शों का अद्वितीय संगम था। वे मेरे लिए केवल स्नेहमयी दादी ही नहीं, बल्कि सशक्त मार्गदर्शिका, करुणामयी शिक्षिका और समाज कल्याण के लिए पूर्णतः समर्पित महान शक्ति थीं।

राजयोग शिक्षिका प्रशिक्षण के क्षेत्र में उनका योगदान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में अत्यंत उल्लेखनीय रहा। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत के युवाओं के चरित्र निर्माण और सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित किया। उनकी सेवाएँ केवल कर्तव्य नहीं, बल्कि गहन साधना थीं - ऐसी साधना, जिसके प्रभाव से आज भी अनेक जीवन अध्यात्म के उज्ज्वल प्रकाश से आलोकित हैं।

उनका दिव्य व्यक्तित्व सूक्ष्म दृष्टि, अद्भुत सजगता और अनुशासन से परिपूर्ण था। उन्हें हर कार्य में सटीकता और संतुलन प्रिय था - चाहे विधिवत पहनावे की मर्यादा हो, प्रभु की स्मृति में प्रेमपूर्वक भोजन बनाना, अतिथियों को आदर से भोजन परोसना या किसी विशेष आयोजन की व्यवस्था। उनकी तीक्ष्ण बुद्धि और व्यवस्थित दृष्टि के कारण छोटी-सी छोटी बात भी उनकी निगाह से छूटती नहीं थी।

उनकी एक विशेषता यह थी कि वे अक्सर बिना शब्दों के भी बहुत कुछ कह देती थीं। उनकी ज्ञानमयी मुस्कान और शांत, सजग आँखें मानो मौन में ही गहन संवाद कर लेती थीं। कभी स्नेहमयी दृष्टि और कभी हल्की मुस्कान ही जीवन और कार्य को नई दिशा दे देती थी, और आवश्यकता पड़ने पर मुस्कुराते हुए प्रेमपूर्वक सुधार भी करवाती थीं।

मेरे जीवन में उनका स्थान अत्यंत विशेष और अमूल्य है। उनका मुझ पर अटूट विश्वास मुझे अथाह शक्ति और आत्मविश्वास देता रहा। उनका निस्वार्थ स्नेह यह अनुभव कराता रहा कि उनका प्यार मेरे जीवन की एक शक्तिशाली सुरक्षा है।

वे सच्ची आध्यात्मिक शिक्षिका की भाँति मेरी उन्नति, आचरण-व्यवहार और नैतिक जीवन मूल्यों के प्रति सदैव सजग रहती थीं। उनका प्रयास यही रहा कि मैं केवल सफल ही नहीं, बल्कि संवेदनशील, कर्तव्यनिष्ठ और मूल्यनिष्ठ बनूँ।

दादी रतनमोहिनी जी का जीवन प्रभु-प्रेम, अनुशासन, सेवा तथा आध्यात्मिक, पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों से परिपूर्ण प्रेरक उदाहरण है। मेरे लिए उन्हें केवल अतीत की स्मृति मान लेना संभव नहीं, क्योंकि उनकी शिक्षाएँ, पावन संग से मिले संस्कार और उनका स्नेह आज भी मेरे जीवन में जीवित हैं और सदा मेरा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

ब्रह्माकुमारी संतोष दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, रूस

















दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

परमात्मा की याद केवल एक भावना नहीं, बल्कि शक्ति का स्रोत है। जब हम सच्चे प्रेम से परमात्मा को याद करते हैं, तो हमारे अंदर की कमजोरियाँ समाप्त होने लगती हैं। यह शक्ति पुरुषार्थ से भी अधिक प्रभावशाली होती है। जितना हम परमात्मा की महानताओं को याद करते हैं, उतना ही हमारा आत्मिक बल बढ़ता है। यह स्मृति हमें परिवर्तन की शक्ति देती है और जीवन को स्थायी रूप से बदल देती है। इसलिए हर संकल्प में, हर क्षण में परमात्मा की स्मृति को बनाए रखो - यही आत्मिक शक्ति का आधार है।

ॐ शांति









दादी जी का दिव्य व्यक्तित्व – मानवता के लिए ईश्वरीय वरदान

दादी रतन मोहिनी जी का स्वभाव अत्यंत मिलनसार था। प्रारंभ में वे हमें प्रभात फेरी में ले जातीं, नारे लगवातीं और सभी व्यवस्थाएँ अत्यंत सुंदर ढंग से करती थीं।

वे अपने नाम के अनुसार ज्ञान-रत्नों की खान थीं - कभी सुनाने में नहीं थकतीं और सभी को स्नेह देती थीं। सभा में वरदानी हाथ उठाकर सबको आशीर्वाद देती थीं। हम सभी टीचर बहनों की ट्रेनिंग भी उन्हीं से हुई। कन्याओं की ट्रेनिंग और विशेष टीचर्स को पालना देकर आदर्श शिक्षिका बनाने का वे सुंदर उदाहरण थीं।

वे अत्यंत सक्रिय और सजग रहती थीं। मुरली को मधुरता और गहराई से सुनातीं, जिससे हम ज्ञान की गहराइयों में पहुँच जाते थे। दादी जी 11 वर्ष की आयु से ही आध्यात्मिक ज्ञान का अध्ययन कर रही थीं, फिर भी वे कहती थीं कि पहले भी हम मुरली पढ़ते-सुनते थे, लेकिन अब उसकी गहराई को और स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।

उनके भीतर अनेक विशेषताएँ थीं। जब मैं पुणे में थी, तब वे अपनी माताजी के साथ आई थीं। मैंने देखा कि वे अपने और अपनी माताजी के कपड़े स्वयं धोतीं, सुखातीं और इस्त्री भी करती थीं। ट्रेनिंग के समय मैं उन्हें ध्यान से देखती थी - उनमें कितनी स्वच्छता, निर्मलता और निर्माणता थी। वे अपने कपड़ों और स्थूल सफाई दोनों में अत्यंत सजग रहती थीं। मैंने उनसे साड़ी इस्त्री करना भी सीखा।

वे जब भाषण देतीं, तो चाहे ज्ञानी हों या नए जिज्ञासु, हर आत्मा को ज्ञान की गहराई में ले जाती थीं। वे बाबा की विशेष बातें अत्यंत सरलता और शुद्धता से सुनाती थीं। उनके भीतर पवित्रता और सादगी कूट-कूट कर भरी थी।

उन्हें कभी खाली नहीं देखा। लगभग 100 वर्ष की आयु में भी उनमें मुरली सुनाने और सेवा का उमंग-उत्साह बना रहा। उन्होंने स्वयं को कभी बुजुर्ग नहीं माना। वे सदा स्वयं को युवा अनुभव करती थीं और हम उनकी इस मनोस्थिति से सीखते थे - सचमुच हम थक जाते थे, पर दादी जी नहीं थकती थीं।

दादी जी को हैदराबाद की सेवाओं से विशेष प्रेम था। वे सदा सेवा के लिए नए कार्यक्रम बनाती रहतीं और जब भी आंध्र-तेलंगाना क्षेत्र में आतीं, हैदराबाद अवश्य आतीं। उन्हें यहाँ आना अत्यंत प्रिय था। अस्वस्थ होने पर भी वे पूछती थीं - "मुझे हैदराबाद नहीं ले जाओगे?" यह मेरा सौभाग्य है कि उनका विशेष स्नेह और मार्गदर्शन मुझे मिला। यदि कभी हम मिलने नहीं जाते, तो वे स्वयं पूछतीं - "आज बहुत समय बाद आई हो।"

उनके नेत्रों में गहरी रूहानियत थी। लगभग 100 वर्षों की योग, तपस्या और पवित्रता का प्रभाव उनकी दृष्टि में स्पष्ट झलकता था - ऐसा अनुभव होता था मानो उनके माध्यम से परमात्मा का रूहानी प्यार मिल रहा हो।

ब्रह्माकुमारी कुलदीप दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, हैदराबाद


अनुभूति - भवन
का उद्घाटन








Brhamakumaris
Purity
Peace
Prosperity
75
Years
Platinum Jubilee

दादी जी ज्ञानमूर्त, गुणमूर्त और योगमूर्त देवी-समान थीं

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी का जीवन त्याग, तपस्या, सादगी और संगठन कुशलता का अद्भुत संगम था। उनके व्यक्तित्व में मातृत्व की मधुरता और प्रशासन की दृढ़ता का संतुलन स्पष्ट झलकता था। दादी जी के सान्निध्य में आना मानो शांति और शक्ति के सागर के समीप बैठना था। उनका हर शब्द मुरली समान मधुर व प्रेरणादायक होता था। वे कम बोलती थीं, पर जो भी कहतीं, सीधे हृदय को स्पर्श करता था। उनकी प्रमुख विशेषता थी हर परिस्थिति में स्थिरता और समाधान की शक्ति। चाहे संगठन की चुनौती हो या सेवा विस्तार का निर्णय, वे सदा धैर्यपूर्वक, शांतचित्त से निर्णय लेती थीं। उनके चेहरे पर हल्की मुस्कान और नेत्रों में आत्मविश्वास सदा झलकता था।

इंदौर जोन की सेवाओं की रिपोर्ट सुनते समय वे अत्यंत ध्यानपूर्वक सुनतीं और सरल शब्दों में मार्गदर्शन देतीं - "सेवा में योग और आपसी स्नेह का संतुलन बनाए रखो।" उनके ये शब्द आज भी सेवा-पथ के दीपक समान हैं। वे हर टीचर बहन की छोटी सेवा को भी सम्मान देती थीं और कहती थीं कि संगठन की शक्ति सामूहिकता में है। उनका जीवन सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व अधिकार से नहीं, बल्कि प्रेम और उदाहरण से स्थापित होता है। उनका जीवन एक चलती-फिरती प्रेरणा था - सादगी, अनुशासन, समयबद्धता और परमात्म-स्मृति उनकी दिनचर्या के अभिन्न अंग थे। उनके सान्निध्य में हर व्यक्ति आत्मिक शांति और प्रेरणा अनुभव करता था। आज भी दादी रतनमोहिनी जी की स्मृतियाँ संसार के लिए अमूल्य धरोहर हैं। उनका स्नेह, मार्गदर्शन और आध्यात्मिक शक्ति हम सभी को सेवा-पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा।

ब्रह्माकुमारी आरती दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, इंदौर

दादी रतन मोहिनी जी - नाम के अनुरूप उनका व्यक्तित्व, गुण और स्वरूप था। वे यज्ञ की अनमोल निधि, दिव्य रत्न और कोहिनूर समान तेजस्विनी आत्मा थीं। ज्ञान-रत्नों से अलंकृत और परमात्म शक्तियों से दीप्त उनका जीवन निस्वार्थ सेवा, गहन योग और पवित्रता का सजीव स्वरूप था। उनके प्रत्येक संकल्प और दृष्टि से परमात्म प्रेम की निर्मल गंगा प्रवाहित होती थी।

मेरा उनसे प्रथम मिलन लगभग पचास वर्ष पूर्व मधुबन के पांडव भवन में हुआ। उस समय उनकी "ज्ञान-स्वरूप स्थिति" की गहन क्लास ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी। उनके शब्द आत्मा को भीतर तक स्पर्श करते थे - मानो वे अनुभूति की शक्ति सीधे आत्मा तक पहुँचा रही हों। तभी से योग में गहराई का अनुभव और आत्मिक जीवन में दृढ़ता बढ़ती गई।

सन् 2006 में इंदौर में 10,000 की सभा के बीच उन्होंने डेढ़ घंटे खड़े होकर आत्मा-परमात्मा का परिचय दिया और आधे घंटे तक योग की गहन अनुभूति कराई। उनकी स्थिरता, ऊर्जा और आत्मिक शक्ति अद्भुत थी। पूरी सभा मंत्रमुग्ध हो गई - मानो उनकी युवा शक्ति पूर्ण रूप से जागृत हो उठी हो। उनकी उपस्थिति से वातावरण में शांति और दिव्यता का विशेष संचार हो गया। अंतिम दिनों में वे साइलेंस स्थिति में अधिक रहती थीं, फिर भी उनकी इस अवस्था से रूहानियत और पवित्रता के प्रकंपन अनुभव होते थे। ऐसी दादी जी सदा हमारे प्रेरणा स्रोत रहेंगी और हमें आगे बढ़ने की शक्ति देती रहेंगी।

ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, इंदौर



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

अपनी खुशी को किसी परिस्थिति या व्यक्ति पर आधारित मत बनाओ। सच्ची खुशी वह है जो अंदर से आती है - परमात्मा के प्रेम और स्मृति से। जब हम इस आंतरिक खजाने को पहचान लेते हैं, तो बाहर की परिस्थितियाँ हमें प्रभावित नहीं कर पातीं। अनेक स्वभाव, अनेक परिस्थितियाँ सामने आएँगी, परंतु हमें अपने मन को अंगद के समान अचल बनाना है।

ऐसा पक्का संकल्प हो कि कोई भी बात मेरी खुशी को समाप्त नहीं कर सकती। जब आत्मा स्वयं में स्थिर रहती है, तो खुशी स्वतः प्रवाहित होती है। यह स्थिति ही सच्ची स्वतंत्रता है - जहाँ आत्मा बाहरी प्रभावों से मुक्त होकर आनंद में स्थित रहती है।

ॐ शांति








शिव कल्याण सहायक

दादी जी के सान्निध्य में रहकर, उनकी अलौकिक पालना से सीखा

जब मैं प्रारम्भ में पांडव भवन आई, तब मुझे रसोई में सेवा करने का अवसर मिला। उन दिनों शांतामणि दादी जी सेवाधारियों को संभालती थीं। दादी जी ने 90 कुमारियों में से मुझे चुनकर दादी रतन मोहिनी जी के पास सेवा में भेजा।

जब रतनमोहिनी दादी जी ने मुझे पहली बार देखा, तो वे बहुत प्रसन्न हुई। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे वे मुझे पहले से ही जानती हों। प्रारम्भ में मुझे केवल 15 दिनों के लिए सेवा में बुलाया गया था, लेकिन दादीजी को इतना अच्छा लगा कि मैं उनके पास 7 वर्षों तक रही। यह मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा कि मेरे समर्पित जीवन की शुरुआत इतनी शुभ रीति से हुई।

मैं 14 वर्ष की आयु में दादीजी के पास आई थी। इसलिए दादीजी ने जो भी सिखाया, मैंने उसे तुरंत जीवन में धारण करने का प्रयास किया। इससे मुझे बहुत दुआएँ भी मिलीं। मुझे नृत्य करना, गीत गाना और खेल-कूद में भाग लेना भी अच्छा लगता था, और इन सब में दादीजी ने मुझे हर प्रकार से सहयोग दिया।

दादीजी से हमें बहुत प्यार और स्नेह मिला। मेरे ब्रह्माकुमारी बनने में उनका विशेष योगदान रहा। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली मानती हूँ कि मेरे ब्रह्माकुमारी जीवन की शुरुआत दादीजी के साथ हुई। उन्होंने 14 वर्षों की तपस्या द्वारा अपने जीवन को बहुत ऊँचा और पवित्र बनाया था।

दादीजी ने हमें सर्वगुण सम्पन्न बनाने के लिए बहुत मेहनत की। हर कदम पर और हर बात में उन्होंने हमें होशियार और समझदार बनना सिखाया।

ब्रह्माकुमारी रानी दीदी
राजयोग शिक्षिका, पिलीबंगा

मेरा परम सौभाग्य रहा कि मुझे दादी रतनमोहिनी जी के साथ रहने का अवसर मिला। बाबा ने मुझे घूमने के लिए मुंबई भेजा था, लेकिन वहाँ सेवा क्षेत्र में बहुत रुचि के साथ सेवा करने का अवसर मिला और मैं वहीं रह गई।

उस समय दादी भी वहीं थीं। मैंने दादी का स्वभाव बहुत मधुर देखा। वे सभी का बहुत सम्मान और प्रेम करती थीं। उनका दिल बहुत विशाल था। जब भी किसी को सौगात देतीं, तो बड़े दिल से देतीं और अपनी स्नेहभरी दृष्टि से निहाल कर देतीं। वे कदम-कदम पर अच्छी राय देकर सबको आगे बढ़ाती रहती थीं।

देश-विदेश की सेवाओं का दादी को बहुत अनुभव था। वे हर कार्य बड़े रुचिपूर्वक करती थीं। टोली बनाने का भी उन्हें बहुत अच्छा अनुभव था। उनकी वाणी में बहुत मधुरता थी और चेहरा सदा मुस्कुराता रहता था। उनमें बापदादा की मीठी पालना का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाई देता था।

ब्रह्माकुमारी रानी दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, मुज़फ़्फरपुर







दादी जी का हर कर्म और हर बोल अनुशासन का जीवंत सबक था

1994 में मैं नया-नया मधुबन में सेवा के लिए आया था। उस समय मैं 18 वर्ष का था और एक वक्तव्य प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। दादी रतन मोहिनी जी को अत्यंत खुशी और गर्व हुआ कि एक नया युवा कुमार उस प्रतियोगिता में अव्वल आया, जिसमें अन्य सभी प्रतिभागी मधुबन के अनुभवी और वरिष्ठ थे। तब वे पहली बार हिस्ट्री हॉल में मुझसे विशेष रूप से मिलीं। जैसे माँ अपने बच्चे की विशेषता पहचानकर उसे आगे बढ़ाती है, वैसे ही उन्होंने मुझे परख लिया और एक माह बाद अखिल भारतीय युवा मैटाडोर रैली में माउंट आबू से गोवा तक नेतृत्व के लिए चयनित किया। तभी से उनके साथ मेरा माँ-पुत्र जैसा स्नेहपूर्ण संबंध बन गया, जो अंत तक बना रहा।

जहाँ भी यात्रा जाती, दादी जी विभिन्न स्थानों पर आकर संगठन से मिलतीं और हमें उमंग - उत्साह से आगे बढ़ातीं। वे सदा कहती थीं कि युवा ही धरती पर स्वर्णिम प्रभात लाएगा, संसार को बदलेगा और अध्यात्म की लहर फैलाएगा। 70 से अधिक आयु में भी उनकी युवा ऊर्जा देखकर संगठन अलौकिक मस्ती में झूम उठता था - वे सचमुच उदाहरण मूर्ति थीं।

उनका मेरी आध्यात्मिक उन्नति पर विशेष ध्यान था। उनका जीवन और दिनचर्या मेरे लिए आदर्श थी। वे समयबद्ध और पूर्णतावादी थीं। दादी जी देश-विदेश में लाखों लोगों को अध्यात्म का ज्ञान सुनाती थीं। इतनी महान विभूति, ईश्वर का अमूल्य हीरा थीं, फिर भी उनका जीवन विनम्रता, शालीनता, सरलता और सहजता से सुसज्जित था।

ब्रह्माकुमार रूपेश भाई
राजयोग शिक्षक, माउंट आबू

मुझे यह परम सौभाग्य मिला कि लगभग 20 वर्ष की आयु से लेकर 51 वर्षों तक मीठी-प्यारी दादी जी की स्नेहभरी पालना का अनुभव करता रहा। प्रारम्भ से ही उनके प्रति एक अपना-सा अधिकार महसूस होता था। दादी जी चाहे कितनी भी व्यस्त हों, जैसे ही उनकी दृष्टि मुझ पर पड़ती, वे मुस्कराकर तुरंत अपने पास बिठा लेतीं। बाद में समय मिलते ही बड़े प्रेम से मेरा समाचार पूछतीं और जीवन के लिए अमूल्य निर्देश देतीं।

उनके साथ बैठना, उनके कक्ष में भोजन करने का सौभाग्य - ये स्मृतियाँ आज भी अमूल्य हैं। एक बार उन्होंने अपने हाथों से मुझे सोने की अंगूठी पहनाई थी, जो आज भी मेरी उँगली में है। उसे देखते ही उनका स्नेह, शक्ति और शुभभावनाएँ अनुभव होती हैं। नीमच में उनके अनेक बार आगमन हुए। 2008 में जानकी दादीजी के साथ तीन दिन के प्रवास में 18 से अधिक सेवा कार्यक्रम हुए, जिनमें हजारों लोगों ने उनके स्नेह और आशीर्वाद का अनुभव किया।

दादी जी के हृदय में सभी वरिष्ठ दादियों के प्रति गहरा सम्मान था। उनका व्यवहार सदा विनम्र और स्नेहपूर्ण रहता था। जब भी मैं पाण्डव भवन या शांतिवन में उनसे मिलता, वे प्रेम से बुलाकर मेरा हाथ पकड़ लेतीं और साथ चलतीं - वह क्षण मेरे लिए अनमोल वरदान होता था।

ब्रह्माकुमार सुरेन्द्र भाई
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, मध्य प्रदेश


Gulbarga University
Doctor of Laws

दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

कर्म करते हुए भी स्मृति बनाए रखना ही सच्चा योग है। केवल बैठकर याद करना पर्याप्त नहीं, बल्कि चलते-फिरते, कार्य करते हुए भी परमात्मा की याद बनी रहे - यह अभ्यास जरूरी है। इसके लिए बीच-बीच में स्वयं को याद दिलाते रहो। चेहरा मुस्कुराता रहे और मन हल्का रहे। जब कोई परिस्थिति आए, तो तुरंत याद आए - यह ड्रामा है। इससे हम दुःख से दूर हो जाते हैं। यह अभ्यास हमें मजबूत बनाता है और हर परिस्थिति को सहज बना देता है।

ॐ शांति











दादी जी निर्माणता, निर्मलता, निश्चलता और सरलता की देवी थीं

दादी रतनमोहिनी जी के साथ के अनुभव सृष्टि नाटक चक्र के अत्यंत सुंदर और प्रेरणादायी दृश्य हैं। दादी जी विशिष्ट व्यक्तित्व की धनी थीं। स्थापना के आदि रत्नों में से ऐसी रत्न थीं जो अंत तक सबकी स्नेहभरी पालना करती रहीं। दादी जी का सान्निध्य मुझे पहली बार मधुबन आने पर ही प्राप्त हुआ और यह सिलसिला अंत तक असीम स्नेह और मार्गदर्शन के रूप में चलता रहा।

मुझे राजस्थान की सेवा में रखने के निमित्त भी दादी जी ही बनीं। दादी जी पल-पल मार्गदर्शिका बनकर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी शिक्षा समय-समय पर देती रहती थीं। दादी जी ने ही मुझे मुरली सुनाने की विधि सिखाई। प्रशिक्षण के बाद जब मैं सेवाकेंद्र पर गई, तो दादी मुझे सेवा की सूक्ष्म टिप्स बताती रहती थीं। वे पत्र के माध्यम से भी लिखकर ज्ञान और मुरली के पॉइंट्स पर मंथन करने की विधि समझातीं और प्रेरणा देतीं कि मुरली की गहराई को स्वयं भी समझें और अन्य सभी को भी सरलता से समझाएँ।

दादी जी का स्वच्छता और सलीके पर विशेष जोर रहता था। एक बार जब मैं मधुबन से सेवाकेंद्र वापस जाने वाली थी, तो दादी ने पूछा, "सब पैकिंग हो गई?" मैंने कहा, "हाँ जी दादी।" तब वे मेरे कक्ष में आईं, सूटकेस देखा और उसे खाली कराकर मुझे सलीके से कपड़े जमाना सिखाया। ऐसी मातृवत और मित्रवत पालना आज भी स्मरण होती है तो मन गदगद हो उठता है।

दादी जी ने हमेशा इकॉनमी और एकनामी का पाठ पढ़ाया। जब भी मैं सेवा का समाचार सुनाती, दादी जी बड़े प्रेम से सुनतीं और साथ ही मार्गदर्शन भी देतीं। एक बार सेवा का फोटो दिखाने पर उन्होंने पहले उसकी सराहना की, फिर स्नेहपूर्वक समझाया कि फोटो खींचते समय कैमरे का ध्यान रखना चाहिए, ताकि फोटो अच्छा आए। ऐसी सूक्ष्म और उपयोगी सीखें मुझे उनसे निरंतर मिलती रहीं।

यदि किसी कारणवश मैं मधुबन अधिक समय तक नहीं जा पाती थी, तो दादी जी कहतीं, "तुम्हें हर बाबा मिलन में आना चाहिए। कभी-कभी सेवा के कारण न आ पाओ तो कोई बात नहीं, लेकिन अधिक मिस नहीं करना चाहिए।" यह भी मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे कुछ समय दादी जी के ऑफिस में सेवा करने का अवसर मिला।

जब मैं डूंगरपुर सेवाकेंद्र पर सेवार्थ आई, तो पता चला कि दादी जी लगभग 20 वर्ष पहले वहाँ आ चुकी थीं। उस समय पूरे जिले में मात्र दो भाई ही ज्ञान में चलते थे, जो मुंबई से दादी जी के संपर्क में आए थे। उनके निमंत्रण पर दादी डूंगरपुर जिले के सागवाड़ा तहसील तक आई थीं। ऐसी निर्मल, निश्चल और सरल थीं हमारी दादी जी।

डूंगरपुर में सेवा के दौरान जब राजयोग भवन निर्माण का कार्य चल रहा था, तब दादी जी ने बहुत प्रेरणा और सावधानियाँ दीं। भवन की नींव रखने के लिए वे स्वयं डूंगरपुर पधारीं। उस समय उन्होंने वरदान देते हुए कहा था कि यह कन्याओं का ट्रेनिंग सेंटर बनेगा। सचमुच यहाँ से अनेक कन्याओं ने प्रशिक्षण लिया और आज अपने सेवाकेंद्र संभालने योग्य बनीं। यह सब दादी के आशीर्वाद से ही संभव हुआ।

अंतिम समय तक भी जब मैं दादी जी से मिलने जाती, तो वे बहुत देर तक मेरा हाथ पकड़े रहतीं। मुझे ऐसा अनुभव होता कि दादी मुझमें शक्तियाँ भर रही हैं।

मैं अपने को अत्यंत सौभाग्यशाली समझती हूँ कि संगमयुग की ऐसी महान विभूति के निकट रहने और उनके स्नेह व मार्गदर्शन का अनुभव करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ।

ब्रह्माकुमारी विजयलक्ष्मी दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, राजस्थान







बालसुलभ निर्मलता और अनुशासित गरिमा का अद्भुत संतुलन

दादी रतन मोहिनी जी के बारे में जब भी मैं सोचती हूँ, तो उनके जीवन की अनेकों विशेषताएँ सामने आ जाती हैं। उनका जीवन हम सभी के लिए एक सुंदर उदाहरण था। अपने अनुभवों से उन्होंने हमें बहुत कुछ सिखाया। दादी जी के साथ बिताए वे अनमोल पल, उनके अनुभव और शिक्षाएँ आज भी उतनी ही ताज़ा प्रतीत होती हैं।

उनके नाम के अनुरूप उन्होंने ज्ञान के अकूत रत्नों से हजारों हृदयों को मोह लिया था। ज्ञान का गहन अध्ययन उनकी प्रमुख विशेषता थी - मानो परमात्मा से मिला एक विशेष उपहार हो। वे सदैव नए-नए, गहरे और उपयोगी पॉइंट्स सुनाती थीं, जिन्हें भारत और विदेश के सभी लोग बहुत पसंद करते थे।

मुझे उनके साथ देश-विदेश में कई स्थानों पर यात्रा करने का सौभाग्य मिला। एक बार मैंने दादी जी के साथ पूरे ऑस्ट्रेलिया का टूर किया। सिडनी में हम दादी जी को अंडरवॉटर वर्ल्ड दिखाने ले गए थे। वहाँ पानी के नीचे एक टनल जैसी बनी हुई थी, और चारों ओर अनेक प्रकार की छोटी-बड़ी मछलियाँ थीं जिन्हें वे बड़े स्नेह से देखतीं और साथ ही दृष्टि भी देतीं। हम उन्हें मछलियों के बारे में बताते, तो वे ध्यान से सुनतीं और उस अनुभव का आनंद लेतीं। उस समय मैंने देखा कि इतनी बड़ी संस्था की मुख्य प्रशासिका होते हुए भी उनके भीतर बाल-सुलभ सहजता और मासूमियत थी - एक ओर अधिकार, तो दूसरी ओर बालक जैसा सरल भाव; यह अद्भुत संतुलन उनके जीवन में स्पष्ट दिखाई देता था।

मेलबर्न में जब हम पहुँचे, तो दादी जी से हेलीकॉप्टर राइड के लिए पूछा गया। मैंने सोचा था कि शायद वे मना करेंगी, पर उन्होंने पूरे उत्साह से सहमति दी और सभी सुरक्षा उपकरण पहन लिए। जब पूछा गया कि वे कहाँ बैठेंगी, तो उन्होंने कहा -"मैं पायलट के साथ बैठूँगी, ताकि सब स्पष्ट देख सकूँ और पूरे शहर को सकारात्मक दृष्टि के प्रकंपन दे सकूँ।" वे पायलट के पास बैठीं और पूरे एक घंटे की यात्रा का आनंद लिया। साथ ही हमें बार-बार याद दिलाती रहीं - "देखो, हम कितनी ऊँचाई पर हैं, यहाँ से परमात्मा को याद करना कितना सहज है।" बादलों को देखकर वे कहतीं - "सूक्ष्म वतन की अनुभूति हो रही है।" मेलबर्न में उनके जाने के बाद अनेक लोगों ने राजयोग सीखा - यह उनकी योग शक्ति और संकल्प शक्ति का प्रभाव था।

न्यूज़ीलैंड यात्रा में भी मैंने यही अनुभव किया कि वे जिस-जिस से मिलतीं, उनके प्रति करुणा और अपनत्व की भावना रखती थीं। चाहे कोई किसी भी धर्म या पृष्ठभूमि का हो - क्रिश्चियन, मुस्लिम या बौद्ध - दादी जी सभी को आत्मिक दृष्टि से देखतीं और ऐसा अपनापन देतीं कि हर व्यक्ति अनुभव करता - "यह दादी मेरी है।"

दादी जी को विदेश में रहकर ईश्वरीय सेवा करने का गहरा अनुभव था। जापान और हांगकांग के अपने अनुभवों से वे हमें बहुत कुछ सिखाती थीं। दादी का जीवन अत्यंत सरल था, पर उसके पीछे गहन त्याग, तपस्या और अनुभूतियों की शक्ति थी। इसी कारण उनकी हर सेवा सफल हुई और वे अनुभव की अथॉरिटी के साथ कार्य करती थीं।

आज जब हम दादी जी को स्मरण करते हैं, तो ये सभी अनुभव एक-एक कर स्मृति में उभर आते हैं।

ब्रह्माकुमारी भावना दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, न्यूज़ीलैंड



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

परमात्मा के महावाक्यों को केवल सुनना पर्याप्त नहीं, उन पर मनन और विचार सागर मंथन करना आवश्यक है। दिनभर में एक-एक विशेष बात को चुनकर उस पर चिंतन करें, उसे अपने अंदर अंडरलाइन करें। चाहे उसे लिखें या स्मृति में रखें, पर उस पर बार-बार विचार करें।

इससे हमारे विचारों में गहराई और शुद्धता आती है। धीरे-धीरे वही विशेषताएँ हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाती हैं। यदि हम ऐसा अभ्यास बनाएँ, तो व्यर्थ और अशुद्ध संकल्प अपने आप समाप्त हो जाएंगे। इसलिए सुनना, सोचना और धारण करना - इन तीनों को अपने जीवन का हिस्सा बनाओ। यही प्रक्रिया आत्मा को शक्तिशाली और स्थिर बनाती है।

ॐ शांति











स्नेहमयी, ममतामयी और संस्कारों से संवारने वाली शिक्षिका – दादी रतन मोहिनी जी

लगभग 8 वर्ष की आयु में माता-पिता के साथ घाटकोपर सेवा केंद्र पर आना हुआ। हमारा घर मुलुंड में था, वहीं से घाटकोपर आना-जाना रहता था। दादी रतन मोहिनी जी अपनी लौकिक माताजी देवी बहन के साथ कोलाबा के पास एक छोटे से फ्लैट में रहती थीं।

नलिनी दीदी और दादी जी के बीच अत्यंत निकट संबंध था - मार्गदर्शक, शिक्षक, सखी और मित्रता का सुंदर संगम। इसी कारण दादी जी का घाटकोपर में नियमित आना होता था और वे कम से कम दो दिन रुककर क्लासेस कराती थीं।

1965 में जब हमारे घर में गीता पाठशाला खुली, तब दादी जी घाटकोपर से मुलुंड हमारे घर भी क्लास कराने आती थीं। लगभग 15–20 बार उनका हमारे घर आना हुआ - यह हमारे परिवार का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा। उनकी माताजी देवी बहन भी कई बार आईं और उनका स्नेह व सरलता आज भी स्मरणीय है।

14 वर्ष की आयु में जब मैंने मधुबन में ट्रेनिंग ली और विश्व कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया, तब घाटकोपर में रहते हुए दादी जी की सेवा का अवसर मिला। नलिनी दीदी ने मुझे दादी जी की देखभाल की जिम्मेदारी दी, जिससे उनके साथ निकटता और बढ़ी। दादी जी ने मेरे ऊपर व्यक्तिगत रूप से बहुत मेहनत की - मेरी स्व-उन्नति का चार्ट देखना, दिनचर्या पूछना और छोटी-छोटी बातों में मार्गदर्शन देना।

मैं भी अपनी हर छोटी-बड़ी स्थिति उनसे निसंकोच साझा करती थी और वे अत्यंत प्रेम से समाधान देती थीं। उनके ये उपकार मैं कभी भूल नहीं सकती।

बाद में जब दादी जी मधुबन में स्थायी रूप से रहने लगीं, तब भी जब-जब मैं मधुबन जाती, वही निकटता बनी रही। हम अपने जीवन की हर स्थिति - अच्छी या चुनौतीपूर्ण - उनसे साझा करते और उनका मार्गदर्शन पाते।

दादी जी की प्रमुख विशेषताएँ थीं - स्वच्छता, सटीकता और अनुशासन। उनकी दिनचर्या अत्यंत व्यवस्थित और सटीक थी। वे परमात्मा की आज्ञाकारी, वफादार और ईमानदार सेवाधारी थीं। उनसे मैंने जीवन में अनुशासन और सच्चाई का गुण सीखा। मुझे उनके साथ गुजरात सेवा यात्रा पर जाने का भी सौभाग्य मिला, जहाँ हम भट्ठी एवं क्लासेस के लिए कई स्थानों पर गए। उनके साथ रहकर हर क्षण सीखने को मिलता था। ऐसे अनेक अवसर मिले, जो मेरे लिए अमूल्य हैं।

दादी जी के साथ मेरा यह स्नेहपूर्ण संबंध नलिनी दीदी के माध्यम से बना और जीवनभर बना रहा। आज यही संकल्प है कि दादी जी ने जो पालना, मेहनत और शिक्षाएँ हमें दी हैं, उनका हम प्रतिदान दें और उनके समान जीवन बनाकर दिखाएँ।

ब्रह्माकुमारी शकु दीदी
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, घाटकोपर, मुंबई











ममतामयी स्नेह और आत्मिक अपनत्व की जीवंत मिसाल – दादी रतन मोहिनी जी

जब मैं अपने जीवन की आध्यात्मिक यात्रा को पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो उसमें कुछ ऐसे दिव्य क्षण हैं जो मेरे अस्तित्व का आधार बन गए हैं। उन अनमोल स्मृतियों में दादी रतन मोहिनी जी का स्नेह, मार्गदर्शन और उनकी दिव्य छवि सदैव मेरे साथ रहती है।

मुझे आज भी वह दिन स्पष्ट याद है, जब लगभग 16 वर्ष की आयु में मैंने पहली बार दादी रतन मोहिनी जी को देखा। वे डोंबिवली सेवा केंद्र पर कुमारों की भट्टी के लिए आई थीं। हम उन्हें स्नेह से "घाटकोपर की दादी" कहते थे, क्योंकि मुंबई में सेवा के दौरान उनका घाटकोपर और नलिनी दीदी से अत्यंत स्नेहपूर्ण, निकट संबंध था। हमें उनकी पालना, सहयोग और अपार प्रेम निरंतर मिलता रहा।

बाद में, जब मधुबन जाना होता था, तो मैं उनके ऑफिस में जाकर उनसे मिलता था। दादी जी की अनुशासनप्रियता और शालीनता ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। उनका हर कर्म एक कला समान था - उनका बोलना, बैठना, चलना, ऑफिस में कार्य करना, सब कुछ। ज्ञान की उनकी गहराई और मुरली से उनका लगाव अद्भुत था। वे मुरली का गहन चिंतन करती थीं, महत्वपूर्ण पॉइंट्स लिखती थीं, और मुझे यह सौभाग्य मिला कि उन्होंने स्वयं मुझे मुरली पढ़ने का तरीका सिखाया और बताया कि कैसे एक ही मुरली से चारों विषय - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा - की पॉइंट्स निकाली जाती हैं।

वे युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत भी थीं। वे यूथ विंग की चेयरपर्सन थीं और अपने अंतिम समय तक सक्रिय रहीं। जब वे व्हीलचेयर पर भी थीं, तब भी उनके चेहरे पर एक अद्भुत तेज, स्वमान की झलक और मधुर मुस्कान की चमक बनी रहती थी। उनका चेहरा देखकर ही शक्ति मिलती थी।

मैं लगभग 21 वर्ष का था, जब दादी जी मुंबई, घाटकोपर स्थित पीस पार्क में आई थीं। वे उस स्थान से बहुत प्रभावित हुई। कार्यक्रम के दौरान अचानक उन्होंने मुझे मंच पर बुलाया। जो हार उन्हें पहनाया गया था, वह उन्होंने उतारकर मुझे पहनाया। फ़िर उन्होंने मुझे बड़ा बनकर सबकी पालना करने की प्रेरणा दी।

उन्होंने मुझे शक्तिशाली दृष्टि दी और मेरे सिर पर हाथ रखा। उस क्षण को मैं अपने जीवन की अंतिम साँस तक नहीं भूल सकता। ऐसा लगा जैसे सिर से पाँव तक एक दिव्य करंट प्रवाहित हो गया हो। उनके शब्द और उनकी दृष्टि - सब कुछ मेरे भीतर अंकित हो गया। वही क्षण मेरे जीवन का निर्णायक मोड़ बन गया।

मुझे 2024 की एक विशेष घटना याद आती है। मैं नलिनी दीदी जी के साथ उनसे मिलने गया था। उन दिनों दादी जी अधिकांश समय मौन में तपस्या करती थीं। किसी ने सुझाव दिया कि उनसे हिंदी में बात करें, पर जैसे ही मैंने सिंधी में बात करना शुरू किया, दादी जी ने हमें अपने जीवन के पवित्र अध्यायों से जोड़ना शुरू किया - उन्होंने अपने बचपन, साकार ब्रह्मा बाबा और मधुबन के प्रारंभिक दिनों की बातें हमें सिंधी में सुनाई।

ऐसी परम प्रिय, स्नेहमयी, अनुशासन की मूर्ति और ईश्वरीय जीवन की जीती-जागती मिसाल हमारी दादी माँ को मैं हृदय से कोटि-कोटि नमन करता हूँ।

ब्रह्माकुमार निकुंज भाई
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, घाटकोपर, मुंबई



दादी जी के अनमोल ज्ञान रत्न

रूहानी जीवन का एक सुंदर अभ्यास है - अपनी दृष्टि से एक-दूसरे को परमात्मा की याद दिलाना। जब चेहरा मुस्कुराता हो और नैनों में स्नेह हो, तो वह दृष्टि केवल देखने की नहीं, बल्कि देने की बन जाती है। उस दृष्टि से हम आत्माओं को खुशी, शांति और प्रेम का अनुभव कराते हैं। साइलेंस में रहकर, रूहानी स्नेह से सम्पन्न दृष्टि बनाना, यह बहुत ऊँची सेवा है।

जब हम ऐसे मिलते हैं, तो शब्दों की आवश्यकता नहीं रहती - नज़र ही संदेश दे देती है। इसलिए सदा खुश रहो, मुस्कुराते रहो और अपनी दृष्टि को इतना पवित्र बनाओ कि हर आत्मा को उसमें परमात्मा का स्नेह अनुभव हो। यही सच्ची रूहानी संगत और सेवा है।

ॐ शांति




1st World Parl







रॉयल्टी दादी जी का सहज श्रृंगार था – उनके व्यक्तित्व में दिव्य गरिमा और शालीनता का संगम था

सन 2011 में जब मैं मधुबन के अकाउंट विभाग में सेवार्थ आई, तब एक दिन अमृतवेला योग के समय दादीजी ने अपनी शक्तिशाली दृष्टि से मुझे अपने पास बुलाया। वह क्षण मेरे जीवन का अविस्मरणीय मोड़ बन गया। उसी दिन दादी जी के कॉटेज में मिलने पर दादी जी ने स्नेहपूर्वक कहा - "अब तुम्हें वापस गुजरात अपने सेवास्थान पर नहीं जाना है, अब तुम्हें मेरे साथ ही रहना है।"

उनके इन शब्दों ने मेरे अंतर्मन को गहराई से स्पर्श किया। दादी जी ने मेरी निमित्त टीचर और माता-पिता से विधिवत अनुमति लेकर मुझे अपने सान्निध्य में रखा और स्वयं 25 दिनों तक मुझे सेवा केंद्र की जिम्मेदारी संभालने का विशेष प्रशिक्षण दिया। उन्होंने मुझे केवल सेवा करना ही नहीं सिखाया, बल्कि सबकी पालना करने का संस्कार, अपने से छोटों को स्नेह देने का गुण, और सेवा केंद्र की मधुरता व उन्नति का भाव भी मेरे भीतर जागृत किया।

दादी जी की समझाने की रीति अत्यंत मधुर और गहन थी। वे जो भी समझातीं, उसमें ज्ञान की गहराई और प्रेम की मिठास समाई होती। उनका व्यवहार सर्व के प्रति उच्च कोटि की शालीनता और सम्मान से परिपूर्ण रहता था। दादी जी का निजी जीवन और रहन-सहन भी अत्यंत दिव्य, सादा तथा शालीन रहा।

संस्था के सेवा केंद्रों तथा समर्पित भाई-बहनों के कार्य-व्यवहार में दादीजी की परख-शक्ति अद्भुत थी। वे हर विषय को गहनता से समझकर, त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर निर्णय देती थीं। उनके निर्णयों में दूरदृष्टि, स्पष्टता और कल्याण की भावना समाई रहती थी।

जब भी मैं दादी जी से कहती - "मैं तो आपकी छोटी बालिका हूँ," तो दादीजी स्नेह से मुस्कराकर कहतीं - "अपने को छोटा मत समझो, तुम बड़ी हो।"

उनका विश्वास हमारे लिए शक्ति बन गया और उनकी प्रेरणा हमें निरंतर आगे बढ़ाती रही। बिना कुछ पूछे ही दादी जी इतनी सरल और मधुर वाणी में मेरी सभी उलझनों को सुलझा देती थीं। उनके सानिध्य में बैठते ही जैसे हर प्रश्न का उत्तर स्वयं मिल जाता था।

दादीजी ने हर प्रकार से संपन्न बनाकर, संस्कारों और आवश्यक सामान के साथ, सेवा हेतु मुझे हिण्डौन सिटी, राजस्थान भेजा। राजस्थान की सेवा और वहाँ की संस्कृति से मैं पूर्णतः अनभिज्ञ थी, परंतु उनका मार्गदर्शन, उनका मुझ पर अटूट विश्वास और स्नेहमय पालना मेरे साथ शक्ति बनकर रहा। ऐसे रूहानी वात्सल्य से परिपूर्ण दादीजी ने मुझे केवल सेवा का अवसर ही नहीं दिया, बल्कि आत्मविश्वास और श्रेष्ठ संस्कारों से भी सुसज्जित किया।

मैंने अनुभव किया कि दादीजी का प्रत्येक कार्य एक कला समान था। उनका बैठना, भोजन करना, समझाना, पोशाक धारण करना, उमंग-उत्साह भरना, चलना, उत्तर देना, यहाँ तक कि ऑफिस के कार्य करना - हर क्रिया में अद्भुत निपुणता और सौंदर्य झलकता था। सचमुच, संगम युग पर दादीजी सर्वगुण सम्पन्न और सोलह कलाओं से पूर्ण, सम्पन्नता की साकार मूर्ति समान थीं।

दादीजी के शब्दों का चयन इतना युक्तियुक्त और सटीक होता था कि सामने वाला सहज ही उनकी बातों को स्वीकार कर लेता था। जब भी मैं दादीजी से कहती - "मेरे नाम के साथ 'बहन' मत लगाया करो," तो दादीजी प्रेम से समझातीं - "मैं तुम्हें सम्मान दूँगी, तो सब तुम्हें सम्मान देंगे।" ऐसे अथॉरिटी स्वरूप दादीजी ने हमें सिखाया कि अधिकार के साथ नम्रता और सम्मान का बैलेंस ही सच्चा नेतृत्व है।

ब्रह्माकुमारी हेतल दीदी
राजयोग शिक्षिका, राजस्थान











शांति और स्थिरता की अद्भुत साकार मूर्ति — दादी जी

दादी रतन मोहिनी जी अत्यंत दुर्लभ और विलक्षण व्यक्तित्व की महान राजयोगी थीं, जिनमें अद्वितीय गुण और विशेषताएँ समाहित थीं। उनके संपर्क में आते ही उन गुणों की अनुभूति होती थी और वे प्रेमपूर्वक उन्हें हमारे भीतर भी संस्कारित कर देती थीं।

मैंने दादी जी को कभी भी किसी प्रकार की नकारात्मक भावना या किसी के प्रति शिकायत या खेद रखते नहीं देखा। वे सदा शांति के पर्वत समान अडिग रहती थीं। उनके पास बैठते ही अहंकार-रहित, विकार-रहित आत्म-चेतना की अनुभूति सहज ही होने लगती थी। जब भी मैं उनसे मिलने जाता, हर बार एक नया अनुभव प्राप्त होता - अंतर में गहरी शांति, स्थिरता और मन की पूर्ण शीतलता का अनुभव होता, मानो सभी नकारात्मक भाव समाप्त हो गए हों और जीवन के प्रति नई प्रेरणा जागृत हो गई हो।

जब कभी दादी जी का स्वास्थ्य गंभीर होता, तब हम डॉक्टर स्वयं चिंतित हो जाते थे, परंतु उनके पास पहुँचते ही उनकी मधुर मुस्कान हमारी सारी चिंता दूर कर देती - मानो वे बीमार ही न हों। एक बार मुझे दादी जी के साथ स्वास्थ्य कारणों से मुंबई जाना था। रात के लगभग 1:30 बजे एक कार्डियोलॉजिस्ट से अपॉइंटमेंट था। वहाँ कुछ लोग इतनी देर रात के अपॉइंटमेंट को लेकर असंतोष व्यक्त कर रहे थे, परंतु दादी जी इतनी देर रात में भी अत्यंत शांत, विनम्र और सकारात्मक बनी रहीं। वे डॉक्टर को भी प्रेरित कर रही थीं और अपनी बीमारी के बारे में एक भी शब्द नहीं बोला। जैसे ही दादी जी वहाँ पहुँचीं, पूरा वातावरण शांत हो गया। यह एक शक्तिशाली आत्मा का प्रभाव होता है, जो केवल अपने वाइब्रेशन्स से कठिन परिस्थितियों को भी सहज बना देती है।

ब्रह्माकुमार डॉ. हरि कृपाकर
आर.एम.एम.जी.एच. ट्रॉमा सेंटर, राजस्थान

लगभग 40 वर्ष पूर्व, जब मैं नया-नया आबू आया था, तब एक दिन दादी जी की माताजी का स्वास्थ्य बहुत क्रिटिकल था, तो मुझे बुलाया गया। मैं नया था और ज्ञान की अधिक समझ भी नहीं थी, परंतु दादी जी ने बड़े सत्कार और सम्मान से मुझे अंदर बुलाया और मिलीं।

वे पूर्णतः अनासक्त, न्यारी-प्यारी और साक्षी-दृष्टा स्थिति में थीं। उनका स्वभाव सदा मधुर था और वे सभी बड़ी दादियों तथा सभी भाई-बहनों के साथ अत्यंत सम्मानपूर्ण व्यवहार करती थीं।

जब तक मैं दिल्ली में नौकरी करता था, तब भी कभी-कभी लीला दीदी दादी जी के स्वास्थ्य से संबंधित बात करने के लिए फोन करती थीं। फिर 1995 में मैं आबू स्थायी रूप से आ गया, उसके बाद दादी जी से और निकट संबंध बन गया। निर्भीकता, निरहंकारिता और नम्रता दादी जी का सच्चा श्रृंगार था।

जब भी कोरोनरी आर्टरी डिज़ीज़ से संबंधित कोई कार्यक्रम होता, दादी जी पूरे समूह से मिलती थीं और सभी मरीज उनसे मिलकर अत्यंत प्रसन्नता और आनंद का अनुभव करते थे - वे स्वयं को एक नई रोशनी से भरा हुआ अनुभव करते थे।

दादी जी को मैंने सदा आनंद की अवस्था में देखा। यदि कभी उन्हें तेज बुखार भी होता और मैं इंजेक्शन लगाने जाता, तब भी उन्हें ऐसा अनुभव नहीं होता था कि वे बीमार हैं। वे सदा मुस्कुराते हुए मिलती थीं और कहती थीं - "मैं तो ठीक हूँ, शरीर को रिपेयर करने के लिए तो आप आए ही हो।"

ब्रह्माकुमार डॉ. सतीश गुप्ता
आर.एम.एम.जी.एच. ट्रॉमा सेंटर, राजस्थान






















Chocolate
Factory
Come explore
Pannys
Amazing
World of
Chocolate


CULTURE OF PEACE AND




3rd YOUTH












25
YOUTH FOR CREATIVITY






THE WORLD UNITED
presents
Earth is One, Truth is One, We are One



100 साल की दिव्य कहानी, वाह ये ज़िंदगानी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
मुख्यालय - शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान, भारत
www.brahmakumaris.com/rmd